श्री दुर्गा रामायण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्गा रामायण

(श्रीदुर्गा-सप्तशती-हिन्दी पद्यानुवाद)

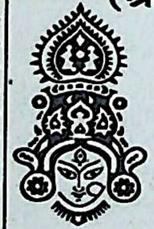

अनुवाद :

पण्डित श्रीरमाकान्त शुक्ल

एम. ए. एल. टी.

प्रकाशक :

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी - २२१००१

☎ २३९२५४३] सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन [मूल्य : १५/-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूज्य श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी की सम्मति

दुर्गा सप्तशती अती, सुन्दर दोहा युक्त ।
हिन्दी भाषा में लिखी, चौपाई संयुक्त ।।१।।
रमाकान्तजी शुक्ल शुभ , कीयो वर अनुवाद ।
देवी जी का है वरद, सुन्दर आशीर्वाद ।।२।।
जो न संस्कृत पढ़ि सकैं, हिन्दी में करि पाठ ।
उनके हू लगि जायँगे, शुभ मंगलमय ठाठ ।।३।।
देवी जी किरपा करें, रमाकान्त क़वि ज्येष्ठ ।
देवी दया दिखायँ के, करि देवै पद श्रेष्ठ ।।४।।
सप्तशती देवी विनय, कवच आदि करि दिव्य ।
भयो ग्रन्थ अतिशय सुखद, भक्ति भावना भव्य ।।५।।

संकीर्तन भवन, झूसी (प्रयाग)
फाल्गुन-कृ० १।२।२६ वि०

– प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आमुख

श्रीदुर्गा-सप्तशती की प्रख्यात ख्याति एवं आदरणीयता जगत् विख्यात है। इन भगवती दुर्गा महाशक्ति का निर्माण सकल देवों के तेज से हुआ है। अतः माँ दुर्गा तैंतिस कोटि देवताओं का एकत्र समन्वय हैं। श्रीदुर्गा-सप्तशती द्वितीय अध्याय के **'अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्। एकस्थं तदभून्नारी व्याप्त-लोकत्रयं त्विषा।।'** मंत्र द्वारा इस बात की पुष्टि होती है। माँ दुर्गा जगत् के जन्म, पालन और लय में अकेली समर्थ हैं। दुर्गा अपने आराधक को सर्वदा सकल पदार्थ प्रदान करती हैं– यह एक निःसंशयात्मक तथ्य है। पुराणों के अनेक आख्यान इस बात के साक्षी हैं कि सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग आदि सभी युगों में दुर्गा देवी की अद्वितीय महत्ता रही है। कलियुग में तो पूज्यपाद शङ्कराचार्यजी, संस्कृत साहित्य के रत्न कालिदास एवं श्री हर्ष, छत्रपति शिवाजी, रामकृष्ण परमहंस, लोकमान्य तिलक एवं पण्डित मदनमोहन मालवीय आदि ऐसे सुख्यात दुर्गाभक्त हैं। जिनको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माँ की कृपा से अपार गौरव प्राप्त हुआ है। इस प्रकार श्रीदुर्गा-सप्तशती, हिन्दूधर्म का ऐसा सर्वमान्य ग्रन्थ है जिसका सम्बल लेकर असंख्य आर्त्त,. अर्थार्थी जिज्ञासु तथा प्रेमी भक्तजन सदैव अपनी-अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति करते रहे हैं।

'श्रीदुर्गा-सप्तशती' मूल-पुस्तक संस्कृत भाषा में है। अतः देश के विभिन्न भागों के ऐसे भक्तों के सम्मुख जो संस्कृत का ज्ञान नहीं रखते है-- एक समस्या उत्पन्न होती है। इस समस्या के समाधान में भक्तों की आत्म-सन्तुष्टि एवं अभिलाषा को देखते हुए देश की विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं में सप्तशती के अनुवाद की एक लम्बी परम्परा दिखलाई पड़ती है। श्रीदुर्गा-सप्तशती हिन्दी पद्यानुवाद की रचना इसी परम्परा में की गई है। वास्तव में मूल वस्तु श्रद्धा है। भाषा का स्थान गौड़ होता है। किसी भी भाषा के माध्यम से साधक, यदि उसमें श्रद्धा है, तो सिद्धि प्राप्त कर सकता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साबरी मन्त्र एवं भगवान् के नाम जाप आदि इसके उदाहरण हैं, जहाँ श्रद्धा ही सिद्धि प्रदान करती है। चूंकि कुतर्क एवं श्रद्धा में विरोध है। अतः इस पद्यानुवाद के पाठकों एवं श्रोताओं से निवेदन है कि श्रद्धालु मन से माँ जगदम्बा के चरणों में विश्वास रक्खें, अम्बिका उन्हें कल्याण देंगी।

श्रीदुर्गा-सप्तशती के ७०० मन्त्रों का यह हिन्दी पद्यानुवाद देवी की ही कृपा एवं प्रेरणा का फल है। सच बात तो यह है कि इन अगम मन्त्रों के अनुवाद की क्षमता मुझमें रंचमात्र भी नहीं है, और फिर पद्यानुवाद तो और दूर की बात है। जो कुछ हुआ यह जगदम्बा का ही कार्य है, उन्होंने ही किया है, और उन्हें ही अर्पित है। आभार की परम्परा में चालीस-चालीसाकार एवं चित्रकाव्यादि के रचयिता श्रीरामसुन्दरदास जिन्होंने अनुवाद सम्बन्धी मेरे पूर्व भावों को नई आशा प्रदान कर, प्रारम्भ से अन्त तक मुझे प्रोत्साहित करते रहे तथा श्रीअवधनाथ मिश्र- शास्त्री,साहित्यरत्न, श्रीरामशिरोमणि मिश्र- एम०ए०, एल० टी०,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साहित्यरत्न, श्रीरूद्रप्रसाद त्रिपाठी- एम० ए०, श्रीमहेन्द्र प्रताप सिंह- एम० ए० एल० टी० श्रीरामकृष्ण त्रिपाठी- सब-इन्सपेक्टर सिविल पुलिस, अपने प्रिय शिष्य श्रीराजनाथ त्रिपाठी (सब-इन्सपेक्टर सिविल पुलिस) आदि अनेक अन्य व्यक्तियों के पुनीत सुझावों एवं कार्यों के प्रति मैं अतीव आभारी हूँ।

अन्त में सभी दुर्गा-भक्तों से निवेदन है कि वे पुस्तक की समस्त त्रुटियों से मुझे परिचित करावें ताकि भावी संस्करण में उसका निराकरण हो जावे। दुर्गार्पणमस्तु।

माघपूर्णिमा
२१-२-७०

रमाकान्त शुक्ल एम. ए., एल. टी.
ग्राम-तिवारीपुर, पो०-दुबावल,
जि०- इलाहाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मंगलाचरण

विनय

जगत नियन्ता जगपति, हे जग के आधार।
लम्बोदर विघ्नेश हे, कर दीजै उद्धार ।।१।।
माँ जगदम्बा भक्ति दो, ज्ञान भक्ति सामर्थ।
लघु तव सुत भी हे जननि, आये किञ्चित् अर्थ ।।२।।
ज्ञानी पवन कुमार हे, कीर्ति प्रदायक नाथ।
रहहु सदा अनुकूल प्रभु, मैं नहिं बनूँ अनाथ ।।३।।
भक्ति-तपस्या भक्ति-बल, भक्ति-जगत का सार।
बिना भक्ति जीवन विफल, करो भक्ति जगधार ।।४।।
दुर्गाजी की भक्ति तो, अद्भुत अमित अपार।
मोक्ष, काम, धर्मार्थ की, सुन्दर हैं दातार ।।५।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सप्तशती पाठांश भी, पढ़ै-सुनै जो नित्य ।
जीवन में सब कुछ लहै, फिर नहिं बनै अनित्य ।।६।।
श्रद्धा, भक्ति-नियम सहित, सप्तशती का पाठ ।
हिन्दी हो या संस्कृत, दाता सुयश, सुठाठ ।।७।।
देवी की ही प्रेरणा, हिन्दी का यह रूप ।
जन-कल्याण सदा करे, माँ का चरित अनूप ।।८।।
जननि कवित उत्पादिका, जननि काव्य की मूल ।
मैं तो हूँ मतिहीन सुत, सम्भव पग पग भूल ।।९।।
यह तव देवी प्रेरणा, तूँ दी जैसी बुद्धि ।
कार्य किया वैसा जननि, अर्पित शुद्धि अशुद्धि ।।१०।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
卐

देवी-कवच

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है ।

मार्कण्डेयजी ने कहा

सकल जगत में गुह्य जो, जन रक्षक है जोय ।
प्रकट न अबतक जो किया, कहहु पितामह सोय ।।

ब्रह्माजी बोले

सुनहु महामुनि जन सुखदायी । परम गुह्यतम कवच सुहायी ।।
प्रथमहि शैलसुता विख्याता । दूसरि ब्रह्मचारिणी माता ।।
तीसरि ख्याति चन्द्रघण्टासी । चौथी कूष्माण्डा सुखरासी ।।
पंचम कहहिं स्कन्द की माता । षष्ठम कात्यायिनि जगमाता ।।
सप्तम कालरात्रि जग छायी । अष्टम महागौरि प्रभुतायी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवम सिद्धिदात्री जगजननी। नवदुर्गा दारुण दुख हरनी ।।
नित गावहिं सब मङ्गल वेदा। देवी नाम के दुर्लभ भेदा ।।
राखहिं देवि न हो फिर डरना। जो नर भय-आरत हो शरना ।।
अशुभ विदारक हैं जगजननी। उसकी कीर्ति जात नहिं बरनी ।।

भक्ति युक्त जो देवि का, करता है नित ध्यान।
देवि अभ्युदय दायिनी, ताहि देत कल्यान।।

महिषासन बैठी वाराही। प्रेतासन चामुण्डा वाही ।।
गरूड़ासीन वैष्णवी भावत। ऐन्द्री का आसन ऐरावत ।।
वृषभारूढ़ माहेश्वरी सोहैं। शिखिवाहन कौमारी मोहैं ।।
विष्णुप्रिया जननी जगदम्बा। पद्मासनहिं विराजहिं अम्बा ।।
ईश्वरि देवी वृषभासीना। शारद हंसारूढ़ प्रवीना ।।
नाना रत्न सुशोभित गाता। योग शक्ति-सम्पन्ना माता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु बहु माता रूप सुहाई। भक्तजनों को देत बनाई।।

भक्तों की हित-साधिका, माँ सब रथ आसीन।
भक्त-रिपू नित घालती, करतीं वैर विहीन।।
शङ्ख, चक्र अरु हल-मुसल, गदा शक्ति अरु पाश।
खेटक, तोमर, परशु युत, करती राक्षस नाश।।
कुन्त, त्रिशूल, धनुर्धरी, भक्तों के ही काज।
धारण करि विचरण करैं, माँ रक्षक जन लाज।।

ध्यावहुँ रौद्र रूप अति घोरा। जननि पराक्रमशालिनि जोरा।।
रक्षा करहु देवि शत्रुञ्जय। राखहु मोहिं मातु मृत्युञ्जय।।
पूर्वदिशा ऐन्द्री माँ राखैं। अग्निशक्ति अग्नेया साखैं।।
दक्षिण रक्षा करहिं वराही। खड्गधारिणी नैऋत माही।।
वारुणि पश्चिम दिशा बचावें। मृगवाहिनि वायव्य सुहावें।।
उत्तर दिशि राखैं कौमारी। शूलधारि ईशानहि भारी।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्माणी ऊपर दिशी रक्षैं। वैष्णवि नीचे विघ्नहि भक्षैं ।।
शववाहन वाली चामुण्डा। देखहिं दशो दिशाले झुण्डा ।।

जया और विजया जननि, आगे पीछे आय।
सदा दास रक्षा करैं, सुन्दर काम बनाय।।

वामभाग अजिता हों जागी । दक्षिण अपराजिता सुहागी ।।
उद्योतिनी शिखा अनुकूला । माथे उमा वास, हर शूला ।।
मालाधरी ललाट बचावैं । यशस्विनी भौंहनि सुख लावैं ।।
त्रयनेत्रा भौंहनि में सोहैं । यमघण्टा नासिक बसि मोहैं ।।
कर्ण सुद्धारवासिनी राजैं । नेत्र मध्य शङ्खिनी विराजैं ।।
रक्ष कपोल कालिका कीजै । कर्णमूल शङ्करि सुख दीजै ।।
देवि सुगन्धा नासिक पासा । ऊपर ओठ चर्चिका आशा ।।
अमरित कला अधर की स्वामी। जिह्वा सरस्वती शुभ कामी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौमांरी रक्षा करहिं, सकल दन्त की साज।
कण्ठदेश की चण्डिका, माता राखहिं लाज।।

चित्रघण्ट घाटी सुख देवैं। महामाया तालू सुधि लेवैं।।
चिबुक देवि कामाक्षी माता। सर्वमङ्गला व्राणी दाता।।
भद्रकालि ग्रीवा सुखदायी। मेरुदण्ड धनुधरी सुहाई।।
बाह्यकण्ठ निलग्रीव निवासा। कण्ठनली नलकूबरि वासा।।
कन्धा खड्गधारिणी माता। बाहु वज्रधारिणि सुखदाता।।
दण्डिनि युगल हाथ रखवारी। देवि अम्बिका अँगुली सारी।।
नखयूथा रक्षैं शूलेश्वरि। कुक्षहि रक्षहिं माँ कूलेश्वरि।।
शोक विनासिनि मन मुदकारी। अस्तन महादेवि भयहारी।।

ललिता जगदम्बा बसहिं, सदा हृदय महँ दास।
राखहिं लज्जा भक्त की, पुरवहिं हिय अभिलाष।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उदर शूलधारिणी सुवासा। मनोविकार करहिं नितनाशा ।।
नाभि कामिनी देवी दानी। गुह्येश्वरी गुह्य, महरानी ।।
पूतन और कामिका माई। मेढ्रम कि नित होइ सहाई ।।
महिषवाहिनि देवि खरारी। करहिं गुदा रक्षा मुदकारी ।।
कटि विभाग भगवती विहारी। विन्ध्यवासिनी जानु सुधारी ।।
महाबला जङ्घा सुखकारी। सकल कामनादा दुखहारी ।।

नारसिंहि सोहैं सदा, निकट गुल्फ के पास।
तैजसि माँ रक्षा करहिं, पाद पृष्ठ करि बास।।
पादाङ्गुलि राखहिं विमल, देवी श्री सुखराशि।
तलवासिनि रक्षा करहिं, पदतल करि दुखनाशि।।
देखि पड़हि जो अतिविकट, दंष्ट्रकराली देवि।
नख रक्षै नित मातु सो, शुभदा अरु शुभ सेवि।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊर्ध्वकिशिनी रक्षहिं केशा। रोम कूप कौबेरि विशेषा ।।
वागीश्वरी जननि हितकारी। राखहिं त्वचा देवि, भयहारी ।।
मज्जा, मांस, अस्थि अरु रक्ता। वसा, मेद पार्वति अनुरक्ता ।।
कालरात्रि अन्तणि रखवारी। मुकुटेश्वरीं पित्त सुखकारी ।।
पद्मकोश रक्षक पद्मावति। कफ चूड़ामणि रक्षक भावति ।।
ज्वालामुखि नखज्वाला पेखैं। देवि अभेद्या सन्धी देखैं ।।
ब्राह्मी देवि शुक्र अनुकूला। छाया छत्रेश्वरि सुखमूला ।।
अहंकार मन बुद्धि प्रदाता। रक्षैं धर्मधारिणी माता ।।

व्यान, समान सुवायु अरु, प्राण, उदान, अपान।
वज्रधारिणी माँ सदा, दें रक्षा कल्यान ।।

कल्याणी देवी सुखदाती। रक्षहिं प्राण सदा मुदमाती ।।
शब्द स्पर्श, गन्ध अरु रूपा। रक्षहु योगिनि सबहु अनूपा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत, रज, तम नारायणि माता। वाराही आयू सुखदाता ।।
वैष्णवि धर्म सुरक्षित कारिणि। राखहिं धर्म सदा दुखहारिणि ।।
चक्रिणि यश, धन, विद्यादाता।लक्ष्मी कीर्ति, रक्ष प्रख्याता ।।
इन्द्राणी मम गोत्र बचावहिं। चण्डिक माँ से पशु सुख पावहिं ।।
महालक्ष्मि मम तनय सुधारहिं। भैरवि भार्या दुःख निवारहिं ।।
पथ की रक्षक सुपथा माता। क्षेमकरी मारग सुखदाता ।।

महालक्ष्मि रक्षा करें, भक्त-राज दरबार।
विजया भयहारिणि जननि, करहिं दुखों से पार ।।
अकथित कवच सुथान जो, रक्षाहीन दिखात ।
विजयप्रदा कल्मष हरणि, सोइ राखौ नित मात ।।
चाहत यदि कल्याण तो, कवचाध्यायी होउ।
कवच पाठ [illegible] करहु, शुभ फल लेवहु सोउ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवच सुरक्षित नर जहँ जाई। तहँ-तहँ धन अरु लाभ सुहाई ।।
मनवाञ्छित सो जन फल पावै। निश्चय देवी ठाठ बनावै ।।
अनुपमेय वह नर होइ जाई। जिसको देवी देत बनाई ।।
कवच सुरक्षित नर जो कोई। निर्भय मृत्युलोक में होई ।।
पूजनीय त्रयलोक अधारा। अपराजित संग्राम मँझारा ।।
देवि कवच यह दुर्लभ देवा। दैवी कला लेहुँ करि सेवा ।।
तीनों सन्ध्या जो कोइ पढ़ई। श्रद्धा सहित जगत हित करई ।।
माँ बल जन अपमृत्यु न पावै। जियइ वर्ष शत जग यश छावै ।।

मकरी, चेचक, कोढ़ अरु, सकल व्याधि का नाश।
कवच पढ़त ही होत है, पुरवहिं देवी आश।।

स्थावर कृत्रिम औरहु जंगम। करि न सकइ कुछ विषका संगम ।।
कवच युक्त नर देखि डराई। मारण मोहन मन्त्र नसाई ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिचारिक प्रयोग अरु जेते। निष्फल होइ कहहुँ सत तेते ।।
सहजा, कुलजा, माला, शाकिनि। अन्तरिक्षचारी सब डाकिनि ।।
भूत, पिचाश, यक्ष, गन्धर्वा। भागहिं ग्रह अरु राक्षस सर्वा ।।
राक्षस-ब्रह्म और बेताला। कूष्माण्डा, भैरवी विशाला ।।
कवचधारि पुरुषहिं जब देखैं। हतप्रभ होहिं मनहिं मन सूखैं ।।
तेज विवर्द्धक मांन प्रदाता। कवच सदा वर उन्नति दाता ।।
कवच पाठि नर सुयश सुहावै। भूतल महँ वृद्धी सुख पावै ।।

कवच पाठकारी प्रथम, पुनः चण्डिका पाठ।
करहिं जगत में जो सदा, देवतुल्य हो ठाठ।।
भू-गिरि-कानन जब तलक, सन्तति तब तक सोह।
अन्त काल में परम गति, देति देवि हर मोह।।
मङ्गलदायी शम्भु सब, जन पावैं आनन्द।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवि-कवच नाशै सकल, भक्तों का दुख द्वन्द ॥
अकथनीय है कवच का, अद्भुत अमित प्रभाव ।
पढ़ै सुनै जो नित्य नर, रहै न कछू दुराव ॥

अर्गला-स्तोत्र

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है ।

मार्कण्डेयजी कहते हैं

नमस्कार मङ्गला भवानी। नमो जयन्ती शिव कल्यानी ॥
भद्रकालि काली कपालिनी। दुर्गा क्षमा स्वधा सुधारिनी ॥
स्वाहा, धात्री देवि नमामी। रक्षहु माँ हे जन सुखकामी ॥
प्राणीं-पीड़ा हारिणि देवी। चामुण्डा जय जय सुखसेवी ॥
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
कालरात्रि माँ जन सुखकामी। जयति जयति जगदंब नमामी ॥

मधु कैटभ हन्त्री जगरानी। जय-जय-जय ब्रह्मा वरदानी ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुख गेहू ।।
महिषासुरहिं विनाशकारिनी। नमः देवि दुख भक्त हारिनी ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
रक्त-बीज हन्त्री जगदम्बा। चण्ड-मुण्ड घातिनि वर अम्बा ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
हन्त्री धूम्राक्षहि अरु शुम्भा। हन्त्री राक्षस विकट निशुम्भा ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहु ।।
जग सौभाग्यदायिनी जोई । युगल चरण वन्दित सब कोई ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
रूप, चरित्र अचिन्त्या जननी। शत्रु विनाशिनि भव दुखहरनी ।।
रूप, सुयश, जय जननी, देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भक्तिपूर्वक जो नमत, चण्डिक चरनहिं पास।
पापविनाशिनि देवि नित, ताको देत विकास।।

रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
भजै, भक्तिपूर्वक जो माता। चंडी व्याधिविनाशिनि माता ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
जो जन सतत अर्चना करही। भक्तियुक्त चण्डी चित धरही ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
देहु देवि सौभाग्य अरोगा। देहु परमसुख माँ सुखभोगा ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
मम बल वृद्धि करहु जगकरनी। मम द्वेषी नाशहु नित जननी ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
देवि करहु जन का कल्याना। परम सुहावनि श्रिय दो दाना ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
देव, असुर-शिर रत्न समेता। घर्षित जेहि पद, कृपानिकेता ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
यश, विद्या, लक्ष्मी जन देहू। और देहु माँ सुत सा छोहू ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।

दैत्य दर्प संहारिनी, शरणगत प्रतिपालि ।
मेरी रक्षा करहु माँ, सकल व्याधि को घालि ।।

रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
चार भुजाधारी परमेश्वरि। चतुर्वक्त्र संस्तुत अखिलेश्वरि ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
कृष्ण सभक्ति अस्तुती जाकी। करहि नित्य जो माँ एकाकी ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
महादेव जगदीश सुहावन। जिसका गुण गावहिं मनभावन ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
इन्द्राणीपति पूजित ईश्वरि। रक्ष रक्ष माता परमेश्वरि ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
चाहे हो प्रचण्ड भुजधारी। दर्प विनाशिनि हे दैत्यारी ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
अमित अनन्द भक्त को देहू। सदा करहु माँ जन पर नेहू ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
पत्नी मनोवृत्ति अनुसारिनि। मनोरमा सन्तान सुधारिनि ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।
अरु दुर्गम भवसागर तारिनि। उत्तमकुलोत्पन्न उद्धारिनि ।।
रूप, सुयश, जय जननी देहू। शत्रु विनाशहु माँ सुखगेहू ।।

नित्य अर्गला पाठ करि, महास्तोत्र पढ़ जोयं।
सप्तशती जप लब्धवर, लहहिं श्रेष्ठ जन सोय।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जगत में वह बनै, प्रचुर सम्पदावान।
नित-नित नव कीरति लहै, अतुलनीय विद्वान।।

कीलक-स्तोत्र

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है।

मार्कण्डेयजी कहते हैं

परम ज्ञान है जिसकी काया। तीन वेद त्रयनेत्र सुहाया ।।
मङ्गलप्राप्ति हेतु सुखकारी। अर्द्धचन्द्रधारी असुरारी ।।
अवढरदानि भक्त हितकारी। नमः शम्भु हे जन दुखहारी ।।
मन्त्रों का अभिकीलक जोई। सप्तशती अस्तोत्रहिं हैं सोई ।।
अन्य मंत्र का जापक जोई। ताकर भी कल्याणहिं होई ।।
पर जो देवी कीलक पावै। मातुकृपा दुर्लभ सुख पावै ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वशीकरण, उच्चाटंन, मारण। सकलसिद्ध हों कीलक कारण ।।
मन्त्रौषधि अरु साधनहीना। लहहिं सिद्धि होवै सुखधीना ।।

अभिचारिक जग कर्म जो, उच्चाटनादिक ज्ञात।
जप बिनु सिद्धी देखते, कील कृपा सुख्यात।।

कीलक साधक सब कुछ पावै। मिलइ अभीष्ट कुयोग नसावै ।।
जन मन की शंका उत्पन्ना । कौन विधी सुन्दर सम्पन्ना ।।
शिव ढिग जन आये जिज्ञासू । सप्तशती सुन्दर शिवभासू ।।
मातु चण्डिका स्तोत्र सुहावन । तब शिव किया गुप्त अतिपावन ।।
चण्डिक पाठ करै जो कोई । लहै अनन्त पुण्य जन सोई ।।
जापक अन्य मन्त्र जो कोई । चण्डी जपै सदा शुभ होई ।।
चतुर्दशी या अष्टमि ध्यावै । कृष्ण पक्ष जो नर सुख पावै ।।
सर्ववस्तु जो अर्पित करहीं । फिर प्रसादसा लै शिर धरहीं ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तापर माँ अनुकूल नित, होती शिशू समान।
सदा करहिं अनुराग अरु, राखहिं उसका मान।।
महादेव इस भाँति यह, कीलक कीलित कीन।
वाञ्छित फल दाता अमर, जग अस्तोत्रहि दीन।।

कीलक निष्कीलित सुखदाई। जपै संसफुट नित्य सुहाई ।।
गन्धर्वारू पार्षद होई। निश्चय सिद्धि लहहि जन सोई ।।
विचरै भय बिनु वह सुखकारी। करै जननि उसकी रखवारी ।।
अपमृत्यू नहिं ताहि सतावै। देह त्यागि वह स्वर्ग सिधावै ।।
कीलक जानि करहु परिहारा। सप्तशती फिर पढ़ौ अपारा ।।
जो नर जानि न ऐसा करही। निश्चय काल गाल में परही ।।
कीलक अरु निष्कीलन ज्ञाता। दोष रहित हो जगत सुहाता ।।
बुध निर्दोष कीलकहिं पढ़हीं। कृपादेवि पा नित जग बढ़हीं ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौभाग्यादि ललाम जो, नारी के है पास।
वह सब देवि प्रसाद जग, बनो देवि का दास।।
मन्द-पाठ जो नित नर करहीं । देवि-कृपा जन लघुफल धरहीं ।।
ऊँचे स्वर जो पढ़ै सुजाना । पूर्ण सिद्धि पावै सद्ज्ञाना ।।
ऐश्वर्यहि सम्पत्ति प्रदायक । यत्प्रसाद है मोक्ष विधायक ।।
यत्प्रसाद है शत्रूनाशक । यत्प्रसाद सौभाग्य प्रकाशक ।।
सोइ कल्याणमयी सुखदायी । भजहु सदा आरोग्य प्रदाई ।।

तन्त्रोक्त रात्रि-सूक्त

जगद्धात्रि जगदीश्वरी, विष्णु तेज अभिराम।
निद्रा! पालन लयकरी, विधि! बिनवै सुखधाम ।।
वषट्कार, स्वरूप, सुहावन । स्वाहा, स्वधा जननि जगपावन ।।
जीवनदायिनि सुधा स्वरूपा । जगतजननि त्रय मात्रा रूपा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नित्या अर्धहि मात्रा जोई। जो विशेष उच्चरित न होई ।।
देवि जगत्कर्त्री जगमूला । जननी तव स्वरूप अनुकूला ।।
परम जननि, सन्ध्या, सावित्री। जगतधारिणी, जगत् नियन्त्री ।।
तुमसे माँ जग-पालन होई । कल्प अन्त में हरहु तु सोई ।।
देवि, सृजन, पालन, संहारा। जगतीमय माँ तव आकारा ।।
स्मृति, मेधा अरु विद्या, माया। महारूप तव जननि सुहाया ।।

महामोह मय रूप तव, महादेवि आकार ।
महासुरी कहते तुम्हें, नहीं देवि तव पार।।

त्रय गुण विभावनी जगदम्बा । सबकी प्रकृति सदा तू अम्बा ।।
दारुण कालरात्रि, कल्यानी । महारात्रि हे जग सुखदानी ।।
मोहरात्रि, बुधि, बोध स्वरूपा । श्री, ईश्वरी, जननि तव रूपा ।
ह्रीं, लज्जा अरु क्षमा सुहावन । पुष्टि, तुष्टि, शान्ती, मनभावन ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खड्ग, शूलधारी सुखदाती। गदा, शङ्ख, चक्रहि धा ख्याती ।।
चाप, भुशुण्ड, परिघ अरु बाना। सोहैं अस्त्र जगत कल्याना ।।
देवी सौम्य, सौम्यतर रूपा । अतिशय सुन्दर मातु स्वरूपा ।।
पर अरु अपर परा परमेश्वरि। तूँ सत असत शक्ति अखिलेश्वरि ।।

माता तूँ जगदीश्वरी, परम ज्ञान सम्पन्न ।
अस्तुति मैं फिर क्या करूँ, लघु जन मती विपन्न ।।

सृजक और पालक संहारक। निद्राधीन किया जगचालक ।।
को समर्थ तव अस्तुति माता। तूँ जगमूल परम विख्याता ।।
मम शङ्कर अरु विष्णू काया। हे अखिलेश्वरि तेरी माया ।।
अस्तु न कोई प्रतिभाशाली । गा सकता गुण, गौरव, लाली ।।
लोक प्रशंसित तव सुख्याती। अति उदार जगती सुखदाती ।।
मधु कैटभ दुर्धर्षहि जोई । डालहु मोह जननि सुख होई ।।
देवि प्रबोधहु हरि जग स्वामी। हतैं असुर दो बुद्धि सुकामी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

卐

।। श्रीदुर्गायै नमः ।।

श्रीदुर्गा-सप्तशती

प्रथम अध्याय

मेधा ऋषि का राजा सुरथ और समाधि वैश्य को भगवती की महिमा बताते हुए मधु-कैटभ वध का प्रसङ्ग सुनाना।

ध्यान

मधु कैटभ संहार, प्रभु विष्णू के शयन पर।
विधि ने किया पुकार, महाकालि अस्तवन कर ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कान्ति नीलमणिकाय, दशपद, दश आनन जननि।
देवि त्रिनेत्रा माथ, भूषण-भूषित अरि हननि ।।
खड्ग चक्र अरु शूल, गदा बाण मस्तक सहित।
धनुष परिघ अरु शङ्ख, कर भुशुण्डि वैरी रहित ।।
महाकालि माँ सोय, रक्षहिं दें सद्बुद्धि नित।
रहै चरित नहीं गोय, हरहिं विकार सुवास चित ।।

ॐ चण्डीदेवी को नमस्कार है ।

मार्कण्डेयजी बोले

सूर्य पुत्र सावर्णि जो, कहलाये मनु आठ।
सुनिये वह विस्तार से, जन्म कथा का पाठ।।
जिस प्रकार मन्वन्तरधीशा। पाकर महाशक्ति आशीषा ।।
महाभक्त सावर्णि सुहाये। सुनहु कथा वह मुद विस्तराये ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वारोचिष मन्वन्तर नामा। सुरथ नाम राजा शुभ कामा ।।
चैत्रवंश उत्पत्ति सुहायी। भूमण्डल शासक सुखदायी ।।
औरस सुत सा देखहिं राजा । सकल प्रजा छाजहिं सुख साजा ।।
कोला विध्वंसी नृप जबही । हुए शत्रु दुख सुरथहिं तबही ।।
प्रबल दण्डनीती के पालक। सुरथहि ख्याति अचल अरि घालक ।।
कोला विध्वंसी नृप सेना। यद्यपि अल्प काम दुख देना ।।

राजा सुरथ महाबली, परम शक्ति ले साथ।
किया भयानक युद्ध पर, विजय न आई हाथ।।

राजा सुरथ नगर निज आये । समर मध्य कछु राज्य विहाये ।।
प्रबल शत्रु आये नृप देशा । किया आक्रमण बिना अँदेशा ।।
मन्त्री दुष्ट क्षीण लखि राजा । किया हरण धन, सेन, समाजा ।।
हीन प्रभुत्व सुरथ जब भयऊ । मृगया ब्याज गहनवन गयऊ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखा तत्र मेध ऋषि-आश्रम । जो अति शान्त हरहिं द्रष्टा श्रम ।।
मुनि प्रभाव जहँ हिंसक जीवा। सहज स्वभाव छोड़ि सुखसीवा ।।
रहहिं और मुनि शिष्य सुहावन। जेहिं कारण लागत वन पावन ।।
सत्कृत मुनि ढिग अति भूपाला। विचरे इधर-उधर कछु काला ।।

तब नृप मन ममता भयहु, चिन्ता से चित खिन्न।
लगे विचारन निज विगत, घिर दुख विकट अभिन्न।।

पुराकाल मम पूर्वज पाला। हा मम रहित नगर विकराला ।।
मम सेवक जो दुष्ट मलीना। क्या पालिहैं धर्म आधीना ।।
वह मेरा प्रधान वर हाथी। जो मदमस्त प्राणप्रिय साथी ।।
भोगइ कौन भोग हा वीरा । शत्रु अधीन अपरिमित धीरा ।।
मम सेवक जो मम अनुसरहीं। अपर नृपति अनुकूलहिं करहीं ।।
हा मम कष्टित संचित कोषा । अपव्ययी करिहैं व्यय दोषा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार नृप सोच अतीता। चिन्ताग्रस्त, भाग्य विपरीता ।।
देखा इक नर तहँ तेहि काला। देखत लागइ जो दुखघाला ।।

पूछा नृप ने कौन हो, आने का क्या काज।
लगते हो अनमने-से, बतलाओ तजि लाज।।

वैश्य बोला

राजन् मैं वैश्यहिं कुल जाता। मेरा नाम समाधि कहाता ।।
दारा, पुत्र सकल परिवारा। धन लालचवश मोहिं निकारा ।।
नारी, धन अरु पुत्रविहीना। फिरता हूँ बन बना मलीना ।।
विश्वसनीय बन्धु सब मेरे। धन लेकर मुझसे मुँह फेरे ।।
इस परिताप हेतु बन आया। किन्तु याद परिवार सताया ।।
मन उत्पन्न होइ बहु भावा। तरह-तरह का त्रास मचावा ।।
क्षेम धनहि, पुत्रहि अरु दारा। सोचि-सोचि मनसोच अपारा ।।
पुत्र सकल मम स्वेच्छाचारी। सदाचारी अथवा दुरचारी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा ने पूछा

लोभी नारि-सुतादि जो, तुमको दिया निकाल।
कहो सेठि अनुराग क्यों, चित्त प्रेम का जाल।।

वैश्य बोला

बोला वैश्य परम प्रिय बानी। नृपति कहा सब सत्य कहानी ।।
पर मन मम निष्ठुर नहिं होई। परिजन निष्ठुरता प्रति कोई ।।
धन मद लागि नेह जो त्यागी। रिस्ता परिवारिक अनुरागी ।।
जानत हूँ पर जानि न पाऊँ। लम्बी साँसें ले दुख खाऊँ ।।
नहिं उनके मन प्रेम प्रभावा। मानत भी अनुराग लगावा ।।
मैं अति किंकर्त्तव्य-विमूढ़ा। जानत नाहिं कहाँ आरूढ़ा ।।

मार्कण्डेयजी कहते हैं

तदन्तर राजा सुरथ, और वैश्य इक साथ।
आये ऋषि के पास तब, जहँ बैठे मुनिनाथ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यथायोग्य बैठे वहाँ, मेधा ऋषि के पास।
लगे प्रश्न फिर पूछने, हिय में माया वास।।

राजा ने कहा

पूछन चाहत हूँ इक बाता। ऋषिवर तुम समर्थ विज्ञाता ।।
मम अधीन मम चित्त न रहई। जेहि कारण मानसदुख दहई।।
जो साम्राज्य न मम एहि काला। ताही प्रति लगाव की ज्याला ।।
हे मुनीश! मम यह कछु नाहीं । जानत हूँ मन मानत नाहीं ।।
'यह क्या है' हे प्रभु ! बतलावहु। हे मुनिवर! मनसुख दिखलावहु ।।
मम साथी वैश्यहि बेचारा। सच हतभाग्य,भाग्य का मारा ।।
अपमानित सुत भृत अरु दारा। उनके प्रति मन नेह अपारा ।।
युगल दास तव नित दुख भोगी। कुढ़ते हैं बन चिन्ता रोगी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्यक्षहिं जो दोषयुत, उन प्रति ममता होय।
जानत अनजानत बने, मोहग्रस्त हम दोय।।
मारी है प्रतिभा सकल, पैदा है मन मोह।
यह क्या है प्रभु विज्ञ तूँ, बतलावहु करि छोह।।

ऋषि बोले

विषय मार्ग हर प्राणी जानत।अलग-अलग इसमें सुख मानत ।।
दिवा अन्ध हैं कुछ जग प्राणी । रात्रि अन्ध कुछ कहती वाणी ।।
कुछ प्राणी ऐसे जग माहीं । दिवा रात्रि देखैं जग माहीं ।।
यद्यपि मनुज ज्ञानमय होई। किन्तु जगत नहिं बिरला सोई ।।
पशु-पक्षी मृग आदिक जीवा । रक्खहिं वैसा ज्ञान अतीवा ।।
दोनों में है बहु अरु समता । देखहु शिशु प्रति उनकी ममता ।।
भरि चोंचहिं जो लावैं दाना । क्षुधित स्वयं शिशु दे सुखमाना ।।
मनुज व्याघ्र हे जग भूपाला । देखहु जग सिद्धान्त निराला ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझदार नर जगत का, देखौ लोभहि मूल।
बदले देवोपकारहि, चाहत हैं सुत भूल।।
नहिं है अल्प समझ उन माही । ममतायुक्त मोह बिच ताहीं ।।
संसार स्थितिकारिणि जोई । ता प्रभाव से ही यह होई ।।
अस्तु नहीं विस्मय की बाता। महामाय की माया भाता ।।
महामाय देवी शुचि ज्ञानी। मोह चित्त करती अज्ञानी ।।
जगत सृष्टि कर्त्री जगजननी। माँ प्रसन्न मुक्तिदा भरनी ।।
मातु परा विद्या से युक्ता। बन्धन-मोक्ष हेतु, सुख भुक्ता ।।
देवि अधीश्वरि तूँ जगदीशा। लहहिं शक्ति तुमसे सब ईशा ।।

राजा ने पूछा

महामाया जिनको कहत, कौन देवि हैं नाथ।
उत्पत्ती अरु चरित सब, कहहु नमित है माथ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रभो! ब्रह्मविद वर मुनी, यत स्वरूप उत्पत्ति।
अरु प्रभाव आदिक सकल, चाहत सुनन सभक्ति।।

ऋषि बोले

जग जननी नित रूपा राजन । जग उसका स्वरूप सुख भाजन ।।
प्रकटहिं देव कार्य हित लागी । यद्यपि माँ अजन्म सुखभागी ।।
कल्प अन्त जब जगती सारी। एकार्णव निमग्न हो न्यारी ।।
सबके प्रभु विष्णू भगवाना । साधि योग निद्रा धरि ध्याना ।।
शेषनाग शैय्या सुखकारी । आश्रय ले सोते अघहारी ।।
मधुकैटभहिं नाम विख्याता । असुर भयंकर अति दुखदाता ।।
विष्णू कर्णमल से उत्पन्ना । ताहि देखि विधि हुए विपन्ना ।।
विधि संहारन उद्यत दोऊ । देखा विधि जब संकट सोऊ ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाभि कमल आसीन विधि, देखा असुरहिं पास।
उधर विष्णु सोये हुए, छूटी उनकी आश।।
विष्णु विबोधन हेतु विधाता। योगनिद्र की अस्तुति गाता ।।
जो निवास हरि नेत्रहिं करहीं। ध्यान उन्हींका विधि तब धरहीं ।।
जो जगदीश्वरि जो जगधारिनि। जो परिपालक जो संहारिनि ।।
अतुल तेज धारिनि हरि शक्ती। विधिकीन्हीं अस्तुति भरिभक्ती ।।

ब्रह्माजी ने कहा

वषट्कार, स्वर रूप सुहावन। स्वाहा स्वधा जननि जगपावन ।।
जीवनदायिनी सुधास्वरूपा। जगत जननि त्रय मात्रा रूपा ।।
नित्या अर्द्धहि मात्रा होई। जो विशेष उच्चरित न होई ।।
देवि जगत्कर्त्री जगमूला। जननी तव स्वरूप अनुकूला ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परमजननि, सन्ध्या, सावित्री। जगतधारिणी जगतनियन्त्री ।।
तुमसे माँ जग पालन होई। कल्प अन्त में रहहुँ तु सोई ।।
देवि सृजन, पालन, संहारा। जगतीमय माँ तव आकारा ।।
अस्मृति मेधा, विद्या माया। महारूप तव, जननि सुहाया ।।

महामोह मति रूप तव, महादेवि आकार।
महासुरी कहते तुम्हें, नहीं देवि तव पार।।

त्रयगुण विभावनी जगदम्बा। सबकी प्रकृति सदा तूँ अम्बा ।।
दारुण कालरात्रि, कल्यानी। महारात्रि हे जग सुखदानी ।।
मोहरात्रि, बुधि, बोध स्वरूपा। श्री, ईश्वरि जननी तव रूपा ।।
ह्रीं लज्जा अरु क्षमा सुहावन। तुष्टि, पुष्टि, शान्ती, मनभावन ।।
खड्ग, शूलधारी सुखदाती। गदा सुशङ्ख चक्रधरि ख्याति ।।
चाप भुशुण्ड परिघ अरु बाना। सोहैं अरु जगत कल्याना ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौम्य देवि, सौम्येतर रूपा। अतिशय सुन्दर देवि स्वरूपा ।।
पर अरु अपर पार परमेश्वरि। तूँ सत-असत शक्ति अखिलेश्वरि ।।

माता तूँ जगदीश्वरी, परम ज्ञान सम्पन्न।
स्तुति तेरी क्या करूँ, जन लघु मती विपन्न।।

सृजक और पालक संहारक। निद्राधीन किया जग चालक ।।
को समर्थ तव अस्तुति गाता। तूँ जगमूल परम विख्याता ।।
मम शङ्कर अरु विष्णू काया। हे अखिलेश्वरि तेरी माया ।।
अस्तु न कोई प्रतिभाशाली। गा संकता गुण, गौरव, लाली ।।
लोक प्रशंसित तव सुख्याती। अति उदार जगती सुखदाती ।।
मधुकैटभ दुर्धर्षहि जोई। डालहु मोह जनहि सुख होई ।।
देवि प्रबोधहु हरि जग स्वामी। हतैं असुर दो 'बुद्धि सुकामी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋषि कहते हैं

मधुकैटभ वध हेतु जब, विधि ने अस्तुति कीन।
देवि योगनिद्रा तभी प्रकटी विधि! सुख दीन।।
नेत्र नासिका मुख अरु बाहू। उर अरु वक्षस्थल सब काहू ।।
मुक्त योगनिन्द्रा प्रभु जागे। देखत दैत्य क्रोध मन लागे ।।
मधुकैटभ अतिशय बलवाना। पराक्रमी दुर्गुण की खाना ।।
लाल नेत्र मन क्रोधहि भावा। विधि घालक उद्योग सतावा ।।
उठि भगवान् विष्णु तत्काला। कीन्ह बाहु युध अति विकराला ।।
पञ्च सहस्र वर्ष भगवाना। केवल बाहु युद्ध ही ठाना ।।
अति बल उनमत असुरहिं होई। मोह प्रभाव जननि के सोई ।।
कहन लगे फिर विष्णु से, हम हैं अति सन्तुष्ट।
निश्चय ही तुम वीर हो, माँगो जो वर इष्ट।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीभगवान् बोले

यदि तुम दोनों तुष्ट हो, मरो हमारे हाथ।
अन्य इतर वरदान से, करना हो क्या साथ।।

ऋषि कहते हैं

धोखामय हो असुर द्वय, जलमय लखि संसार।
जहाँ न हो डूबी धरा, कहा वहाँ संहार।।

ऋषि कहते हैं

गदा शङ्ख अरु चक्रहि धारी। कहा 'तथास्तु' प्रभू सुखकारी ।।
तुरत शीशधरि जाँघ सुहावन। चक्रहि से काटा प्रभु पावन ।।
ब्रह्माजी जब अस्तुति कीन्हा। इस प्रकार जननी सुख दीन्हा ।।
राजन अगला सुनहु प्रभावा। जो सम्पन्न सकल सुख भावा ।।

卐

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरा अध्याय

देवताओं के तेज से देवी का प्रादुर्भाव और महिषासुर की सेना का वध

ध्यानम्

परशु, गदा, कुण्डिक, धनू, वज्र, पद्म अरु ढाल।
दण्ड, खड्ग, अरु शूल-शर, अक्षमाल सुविशाल ।।
शक्ति, शङ्ख, मधुपात्र युत, चक्र, सुघण्टा, पाश।
कर धारहिं जगदम्ब माँ, पुरवहिं भक्तन आश।।
महिषासुरमर्दिनि जननि, कमलासन आसीन।
महालक्ष्मी माँ मुदबदनि, सुत भजता अति दीन।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋषि कहते हैं

देवासुर संग्राम विशाला। शत वर्षों का था विकराला ।।
असुर स्वामि महिषासुर भारी । सुरनायक शचिपति सुखकारी ।।
असुर सैन्य था अति बलशाली। लही विजय सुर-सेना घाली ।।
महिषासुर बन इन्द्र कराला। उपजावै बहु भय विकराला ।।
आगें करि विधि देव समूहा। गये जहाँ हरि हर जग रूहा ।।
देवन की अति दुखद पराजय। और बताई महिषासुर जय ।।
इन्द्र, अग्नि, रवि, वायूधीशा। इन्दु, वरुण, यम, विजित बलीशा ।।
अन्य और सब देव अनाथा। बना स्वयं महिषासुर नाथा ।।

सब देवों को स्वर्ग से, उसने दिया निकाल।
मनुज भाँति जग में रहहिं, देव-दुःख विकराल।।

दैत्यों की यह सारी करनी। हरि, हर से देवों ने बरनी ।।
कहा प्रभु, हम शरणाधीना। वध उपाय सोचिये प्रवीना ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हरि हर सुना देव दुख भारी। मुख, भौं कोप वक्र भयहारी ।।
कोपयुक्त हरि हर विधि बदना। निकसत अजब तेज सुखसदना ।।
ब्रह्म, शम्भु शक्रादिक गाता। मिला निकलि जब तेज सुहाता ।।
जलता गिरि सा लागइ भरी। ज्वाला व्याप्त चतुर्दिशि सारी ।।
व्याप्त भुवनत्रय में अतिपावन। बेसुमार वह तेज सुहावन ।।
संचित होकर तेज अनूपा। परिणत हुआ नारि के रूपा ।।

प्रभु शङ्कर के तेज से, हुआ प्रकट मुख देवि।
यमहि तेज से बाल सिर, भुजा हरी सुख सेविं।।
इन्दुतेज स्तन युगल, इन्द्र तेज कटि योग।
वरुण तेज जङ्घोरु अरु, भुवन नितम्ब संयोग।।

तेज विरंचि चरण उपजाया। अँगुली सूर्य तेज की माया ।।
वसु तेजहि कर अंगुलि होई। तेज कुबेर नासिका सोई ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाँत प्रजापति तेजहि जाया। पावक तेजहि नेत्र बनाया ।।
सन्ध्या तेजहि भौंह बनाई। कान वायु तेजहि उपजाई ।।
सकल देव तेजन अद्भूता। मङ्गलमयि माँ आविर्भूता ।।
तेजमयी देवी सुर देखा। महिष त्रास तब तजि सुख पेखा ।।
निज शूलहिं इक शूल निकारी। शम्भु दिया तेहि माँ शुभकारी ।।
चक्र एक निज चक्राकारा। विष्णु दिया तेहि जग आधारा ।।

वरुण भेट की शङ्ख माँ, पावक शक्ती दीन।
द्वय तरकस धनु-बान युत, पवन प्रदानहि कीन।।

वज्रहि वज्रोत्पन्न सुहावन । दिया इन्द्र सत्वर मनभावन ।।
निज ऐरावत गजहि उतारी। घण्टा दिया देवि को भारी ।।
कालदण्ड निर्मित भयकारी। यम दण्डा दीन्हा दुखहारी ।।
अस्फटिकाक्षमाल विधि दीन्हा । वरुण प्रदत्त पाश माँ लीन्हा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मादत्त कमण्डलु सोहै। रश्मि दिवाकर रोमहिं मोहै ।।
ढाल और तलवार सुहावन। काल दीन्ह सुन्दर अति पावन ।।
क्षीरसिन्धु दिय निर्मलहारा। अरु दी दिव्यवस्त्र उजियारा ।।
दिव्य कटक-कुण्डल द्वय शोभित। अर्द्धचन्द्र चूड़ामणि लोभित ।।

बाहु हेतु केयूर दी, पदहित नूपुर दीन्ह।
सुन्दर हँसुली गले में, अँगुलि अँगूठी कीन्ह।।

इस प्रकार सागर कृत शोभा। बरनि न जाइ अलौकिक लोभा ।।
दीन्ह विश्वकर्मा शुभ फरसा। हो नित जिससे सुख की वरषा ।।
कवच अभेद शस्त्र बहुनाना। कमलमाल जो नहिं कुम्हिलाना ।।
दीन्ह विश्वकर्मा सुखदाता। जिससे शोभित हो अति माता ।।
कमल पुष्प दी जलधि सुहाता। हिमगिरि सिंह, रत्नसुखदाता ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
पानपात्र मधुमय सुरराजा। मणिमय नागहार अहिराजा ।।

इस प्रकार अन्यहिं सब देवा। दीन्ह अस्त्र, भूषण करि सेवा ।।
अट्टहास देवी तब कीन्हा । भुवनहिं बार-बार रव भीना ।।

देवी यह विकराल जो, नाद किया अति घोर।
रव-गूँजी आकाश में , मचा भयङ्कर शोर।।

हुई प्रतिध्वनि अतिशय जोरा। कम्पित विश्व, समुद्र हिलोरा ।।
डगमगानि तब पृथ्वी डोली। कम्पित सकल भूधरही टोली ।।
देव समूह अधिक हर्षायो। जय जननी आवाज लगायो ।।
सकल महर्षि सभक्ति विनीता। किया अस्तवन गा शुभगीता ।।
क्षुब्ध त्रिलोक देखि सब दानव। किया सुसज्जित तब सेना नव ।।
महिषासुर हो क्रुद्ध अपारा। कहा होत है यह क्या सारा ।।
फिर अति सिंहनाद प्रतिक्रुद्धा। दौड़ा वह करने को युद्धा ।।
प्रभा त्रिलोक प्रकाशित पेखा। आगे बढ़ि वह देवी देखा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दबती थी अवनी सकल, देवी चरण के भार।
स्पर्श गगन का कर रहा, माँ का मुकुट अपार।।
जननि धनुष टङ्कार भयावन। आकाशहि को क्षुब्ध बनावन ।।
सहसभुजामय दिव्य सुज्योती। सकल दिशा आच्छादित होती ।।
छिड़ा युद्ध असुरन से घोरा । होइ भयानक हर पल शोरा ।।
अस्त्र-शस्त्र का विविध प्रहारा। हरदिशि में तब किया उजारा ।।
चिक्षुर महिषासुर सेनापति । युद्धारम्भ किया भीषणगति ।।
सेना चतुरङ्गिणि ले चामर। आया युद्ध असुर अति पामर ।।
राक्षस घोर उदग्रहि नामा। साठि हजार रथी रणधामा ।।
एक सहस्र रथी सहशूला। महाहनू देवी प्रतिकूला ।।
लोम तीक्ष्ण तलवार सम, असिलोमा रण आय।
पाँच करोड़ रथी सहित, बड़ा भयङ्कर काय।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाष्कल साठि लाख रथ जूहा। करन लगा युध लिये समूहा ।।
गज, बाजी, सहस्र रथ एका। परिवारित सह युद्ध अनेका ।।
पाँच अरब रथि ले रण लीना। दैत्य विडाल जङ्ग तल्लीना ।।
और बहुत राक्षस कुख्याता। रथ, हय, नागसहित रण आता ।।
कोटि सहस घिर रथ हय हाथी। महिषासुर रण उनका साथी ।।
तोमर, शक्ति, परशु अरु मूसल। पट्टिश, खड्ग, भिन्दिपद कूशल ।।
करहिं प्रयोग अस्त्र तहँ नाना। देवि साथ वह दैत्य महाना ।।
कियो दैत्य कछु शक्ति प्रहारा। कछु देवीको पाशहि मारा ।।

अपर बहुत से दैत्य यों, खड्गहि देवी मार ।
व्यर्थ किया उद्योग यह, देवी शक्ति अपार ।।

हुई क्रोधमय तब जगमाता। मारै अस्त्र-शस्त्र दुखदाता ।।
काटा अस्त्र [illegible] जो भारी। [illegible] भयकारी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देव ऋषी सेवित जग पाला। अनायास कर कार्यविशाला ।।
केशरि अति सक्रुद्ध माँ वाहन। बढ़ा दवानल सा वन-दाहन ।।
जो निःश्वास मातु रण होई। प्रकट होइ गण अगणित सोई ।।
भिन्दिपाल, पट्टिश अरु खड्गा। परुशादिक अस्त्रहिमय जङ्गा ।।
करहिं सामना बन असुरारी। माँ की कृपा गणहिं बलधारी ।।
देवी शक्ति प्रचुर गण जोई। नाशहिं असुर मिलइ जो कोई ।।

शङ्ख, नगाड़ा गण बजा, करन लंगे संग्राम।
औरहु, बजा मृदङ्ग कुछ, रत देवी के काम।।

गदा शक्ति अरु खड्गाघाता। देवी कीन्ह दैत्यन संघाता ।।
दैत्य विनाशिनि बहुगहि अस्त्रा। हनै त्रिशूल आदि गहि शस्त्रा ।।
नाद भयङ्कर कीन्ही माता। मूर्छित गिरहिं असुर दुखदाता ।।
प्रचुरहि दैत्य बाँधि निज पाशा। असनि घसीट कीन्ह हत आशा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कितने दैत्य हुए तहँ कण्डा। माँ तलवार मार दो खण्डा ।।
केतिक गदाघात से घायल। धरती पर सो गये गिरायल ।।
देवी मूसल कीन्ह प्रहारा। रक्तवमनमय असुर अकारा ।।
शूल प्रहार फटी सी छाती। दैत्य गिरे अंवनी जनु पाती ।।

देवी बाण समूह से, वहाँ रणाङ्गण माहि।
कितने असुर कमर बिना, गिरे सिसकते ताहि ।।

बाज सदृश देवी हर प्राणा। गिरहिं दैत्य जनु खग निष्प्राणा ।।
काया दैत्य कछुक विकराला। मध्यभाग कटि हुई कराला ।।
जंघ रहित कितने तत्काला। गिरहिं अवनि पर देवी घाला ।।
नेत्र, बाँह पद शेषहि एका। दो टुकड़े करि चीर अनेका ।।
मस्तक, कटइ, गिरहिं उठि धावहिं। धड़मय दैत्यहिं युद्ध चलावहिं ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
इतर दैत्य कबन्ध रणबाजा। लयपर नाचहिं मग्न सुसाजा ।।

खड्ग, शक्ति, ऋष्टी ले हाथा। धड़-शिर-हीन दौड़ बहु गाथा ।।
ठहरो-ठहरो इतर सुरारी। देवी युद्ध हेतु ललकारी ।।

जहाँ हुआ संग्राम वह, गिरी जहाँ बहु लाश।।
चलना था सम्भव नहीं हय, रथ, गज जहँ नाश।।

शोणित गज, हय, दैत्यविनाशा। बनी नदी की धारा खासा ।।
तृण दारू की ढेर विशाला। अग्नि सदृश माँ असुरहिं धाला ।।
गर्जन करइ सिंह अति घोरा। हनै दैत्य वह करि-करि शोरा ।।
तुष्ट देव वर्षावहिं फूला। निरखि युद्धको अति अनुकूला ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीसरा अध्याय

सकल सेनापतियों सहित महिषासुर का संहार

ध्यानम्

अङ्ग कान्ति जगदम्ब की, सहस बाल रवि भाँति।
लाल रङ्ग की रेशमी, साड़ी परम सुहाति।।
मुण्डमाल शोभित गले, कर जपमाला सोह।
वर,विद्या अरु अभय की, धारि मुद्र मनमोह।।
रक्तलिप्त अस्तन जननि, कमलासन आसीन।
तीन नेत्र शोभित सदा, आनन सरस प्रवीन।।
माथे मोहन चन्द्र शुचि, रत्नमुकुट सुख देत।
है प्रणाम जगदम्ब को, जो जन की सुधि लेत।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋषि बोले

चिक्षुर देखि सैन्य संहारा। अतिशय क्रुद्ध देवि ललकारा ।।
समर मध्य दैत्यहि भयकारी। माँ पर शरवर्षा की भारी ।।
लागइ शरवर्षा तहँ कैसे । मेरु-शृंग घनवृष्टी जैसे ।।
राक्षस बाण-समूह अपारा । काटी देवि पुनः तहँ सारा ।।
सारथि अश्व तुरत तहँ घाला। जगदम्बा उसका तत्काला ।।
धनुष,ध्वजा, फिर ध्वस्तहि कीन्हा । अङ्गन बाणबींध फिर दीन्हा ।।
रथ, हय, सारथि, धनुष विहीना। दौड़ा-दैत्य खड्ग कर लीना ।।
प्रथमहि सिंह माथ पर भारी। तीक्ष्णधार असि दैत्य प्रहारी ।।

देवी बायीं बाँह पर, फिर प्रहार वह कीन।
पड़तहि देवी भुजा असि, टूटी जनु अति दीन।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनहु सुरथ हे राजन सोई। और कार्य जो-जो तहँ होई ।।
फिर वह रक्त आँख करि जोधा। शूल गहा कर अतिशय क्रोधा ।।
भद्रकालि ऊपर तत्काला। मारा असुर करोध बेहाला ।।
ज्वलित सूर्य मण्डल सा सोई। नभ में तेज प्रज्वलित होई ।।
वह शूलहि आता निज ओरा। देवी शूल प्रहारा जोरा ।।
देवी शूल प्रहार प्रचण्डा। राक्षस शूल हुआ शतखण्डा ।।
चिक्षुर को वह दिया नशाई। देवी ने जो शूल चलाई ।।
चमूपती चिक्षुर बलशाली। गया जहाँ से जब माँ घाली ।।

गजारूढ़ तब चामरहि, आया जङ्ग मझार।
किया जननि पर शक्ति का, आते तुरत प्रहार।।

निष्प्रभ-आहत शक्तिहि तेजा। माँ जगदम्ब भूमि पर भेजा ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
भग्न शक्ति गिरती लखि चामर। क्रुद्ध हुआ अतिशय वह पामर ।।

मारा पुनः शूल भयकारी। निजशर जननि छिन्न करि डारी ।।
देवी सिंह तुरत तत्काला। गज भालहि बैठा विकराला ।।
दैत्य-सिंह के मध्य अपारा। बाहुयुद्ध फिर चला करारा ।।
हाथी से अवनी पर आये। लड़हिं परस्पर जाहिं सताये ।।
तदनन्तर वह सिंह विशाला। दिशि आकाश उछलि तत्काला ।।
चामर शिर पंजहि अलगाई। दिया वहीं शिर धड़ बिलगाई ।।

दैत्य उदग्रहि समर में, वृक्ष शिला से मार।
देवकार्य देवी किया, अवनि उतारा भार।।

दन्त, मुष्टि औ तलहि प्रहारा। दैत्य कराल देवि रणमारा ।।
क्रुद्ध देवि करि गदा प्रहारा। चूर्ण किया उद्धत ललकारा ।।
भिन्दिपाल से वाष्कल मारा। अन्धक, ताम्रशरहि संहारा ।।
उग्रवीर्य उग्रास्य, महाहनु। देवि त्रिशूल साथ छोड़े तनु ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धड़-शिर काट विडाल गिराया। देवि खड्ग यमपुर पहुँचाया ।।
दुर्धर-दुर्मुख बाणहिं काटी। बना दिया काया तिन माटी ।।
इस प्रकार सेना संहारा। देखि महिष बनि महिषाकारा ।।
देने लगा त्रास अति भारी। देवि-गणों को महिष सुरारी ।।

सिंहनाद, निश्वास अरु, चक्कर, वेग, अपार।
शृङ्ग, तुण्ड, लाङ्गूल, औ, खुर से दिया विदार।।

इस प्रकार वह गणहिं गिराई। सिंह ओर झपटा दुखराई ।।
जगदम्बा इत क्रोध विशाला। आवत देखि महिष विकराला ।।
उत महिषासुर महिषाकारा। अतिशय बली क्रुद्ध जनु काला ।।
निज, खुर खोदइ धरती वीरा। गर्ज, सींग गिरि फेकैं धीरा ।।
वेगभ्रमण वश पृथ्वी फाटइ। सिन्धु पूँछ टकरा जग व्यापइ ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
ताहि विकम्पित सींग अघाता। जलधर का उपखण्ड सुहाता ।।

शत-शत-पर्वत उड़ि-उड़ि गिरहीं। निश्वासहि वश नभ में फिरहीं ।।
चण्डिक किया क्रोध अति भारी। आता देख असुर दुखकारी ।।

पाश फेंक वध हेतु जब, जननी बाँधा जङ्ग।
राक्षस ने तब महिष का, किया रूप ही भङ्ग।।

केशरि रूप बना तत्काला। प्रकट हुआ वह दैत्य कराला ।।
जगदम्बा जब कीन्ह तयारी। राक्षस शिर काटन दुखकारी ।।
माया बल बन पुरूषाकारा। खड्ग लिये अति ही विकराला ।।
सायक,खड्ग चर्म से माता। बींधा जब पुरुषहिं को गाता ।।
इस अन्तर बन कर गजराजा। देवि सिंह खीचै करि गाजा ।।
खींचत समय तुरत जगदम्बा। खड्गहि काट शुण्ड अविलम्बा ।।
पुनः दैत्य धरि महिषाकारा। कीन्ह त्रास त्रयलोक अपारा ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
चण्डिक जगतजननि भरि क्रोधा। बार-बार मधु पी निर्लोभा ।।

रक्त-आँखमय जग जननि, मधु पी हँसत दिखात।
उधर असुर गर्जत विकट, उनमत बल-इठलात।।

महिष श्रृङ्ग से फेकै भूधर। देवी शर तेहि घालै ऊपर ।।
बोली वचन देवि तेहि काला। मधु-मद माँ मदमस्त निराला ।।
अटपट वाणी करइ उचारी। माँ तेहि काल मस्त दुखहारी ।।

देवी ने कहा

क्षणभर गरजो मूढ़ तूँ, मद पीती जब लागि।
गरजेंगे सब देवता, सुनि मृत्यू मुदभागि।।

ऋषि कहते हैं

इस प्रकार कहि उछलीं माता। और चढ़ी तहँ दैत्यहिं गाता ।।
पैर दबाइ मारत तलवाला। मारा शूल कण्ठ विकराला ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दबा दैत्य इक उक्ति विचारी। तुरत तहाँ की नयी तयारी ।।
धरि दूसर स्वरूप मुख भागा। जैसे ही वह भागन लागा ।।
अर्द्धगात भी निकल न पाई। निज प्रभाव माँ वहीं दबाई ।।
अर्द्धभाग ही दैत्य शरीरा। करै देवि से रण धरि धीरा ।।
तब देवी अरि मस्तक मारी। काट गिरायो युद्ध मँझारी ।।
मचा भयङ्कर हाहाकारा। भगे प्राण ले असुर अपारा ।।

देव और ऋषि मुदमना, विह्वल दुख अवसान।
दुर्गा माँ जय दायिका, अस गुण कीन्ह बखान।।
गावै सुमधुर गीत अति, तहँ गन्धर्व सुजान।
अप्सरादि नाचैं सकल, गा-गाकर यशगान।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौथा अध्याय

इन्द्र आदि समस्त देवताओं द्वारा जगदम्बा की स्तुति

ध्यानम्

सिद्धी कांक्षावान जन, सेवित माता जोय।
देव परिवृता जयाख्या, दुर्गा ध्यावहु सोय ।।
काले मेघ समान जो, अङ्गाभा परिपूर्ण।
जासु कटाक्षहि है करत, अरि समूह को चूर्ण ।।
शोभित है आबद्ध नित, माथे इन्दू रेख।
त्रिशिख कृपाणहिं-खड्ग कर, धरे चक्र जग देख ।।
सिंह स्कन्धारूढ़ माँ, त्रयनेत्रा जगमूल।
व्याप्त तेज त्रयलोक में, हरहिं दास की भूल ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋषि कहते हैं

महिषासुर सुरारि बलशाली। सेना सहित जननि जब घाली ।।
शक्रादिक रोमाञ्चित गाता। नत मुद-मन प्रणाम करि माता ।।
देवशक्ति पुञ्जहि सुखकरनी। बोले देव सकल फिर जननी ।।
व्याप्त शक्ति माँ की जगमाही। दे कल्याण सकल दुख दाही ।।
अमर महर्षि पूज्य दुखहरनी। देव सभक्ति नामित मुद करनी ।।
सोइ जननी चण्डिक दुखहारी। पालै जगत देव सुखकारी ।।
पुण्यात्मा गृह रमा स्वरूपा। पापिन घर दरिद्रता रूपा ।।

अन्तःकरण विमल पुरुष, बुद्धि रूप जो सोह।
सत्पुरुषहिं श्रद्धा बनी, जननी दे नित छोह।।

लज्जा रूप निवास कुलीना। नमः मातु जग पालु प्रवीना ।।
देव दैत्य समक्ष रण मध्या। अतुलचरित देवि आरध्या ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकल जगत उत्पत्ती कारण। सत, रज, तम मय दोष निवारण ।।
हरि, हर पार न पावहिं माया। आश्रय सकल,अंश जग जाया ।।
आदि भूत तूँ प्रकृति अपारा। अव्याकृता व्याप्त संसारा ।।
स्वाहाकार देव सुखदायी। ताहि तृप्तिदात्री जग मायी ।।
स्वधा रूप माँ करती धारण। पितर-तृप्ति की भी तुम कारण ।।

साधन मोक्ष सुतत्व जो, और अचिन्त्या रूप।
दोष रहित मुनिवर सदा, गावहिं जाहि अनूप।।

इन्द्रियजित तत्वज्ञ मुनीशा। मोक्षकांक्षि ध्यावै जो ईशा ।।
विद्या परा तुम्हीं हो माता। सकल ऋषिन दुखहर सुखदाता ।।
यजुर, साम ऋग्वेदहि रूपा। जननी तुमही शब्द स्वरूपा ।।
त्रयी, भगवती, तव आकारा। पालन करहु जगत आधारा ।।
अखिल शास्त्र सारहि जो ज्ञाना। मेधाशक्ति रूप गुण गाना ।।
दुर्गम भव सागर उद्धारा। दुर्गा नौका रूपाकारा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री, गौरी, हरि-हर सम्मानित। निराशक्ति जन तुमको ध्यानित ।।
मन्द-मन्द मुस्कान सुहावन। चन्द्रबिम्ब मय आनन पावन ।।

कनकोत्तम सी कान्ति को, देखा फिर भी क्रोध।
महिष प्रहारहि कीन्ह फिर, हुआ न किञ्चित बोध।।

देवी तव मुख क्रोध समेता। भयहु लाल विकराल निकेता ।।
उदयकाल शशि सम वह सोहै। रक्षा करि भक्तन मन मोहै ।।
कुटिल भौंह अति प्रलयङ्कारी। डरइ काल तनु देवि निहारी ।।
महिषासुर का प्राण न गयऊ। देखि रूप आश्चर्यहि भयऊ ।।
कुपित काल मुख देखत कोई। क्या रह सकता जीवित होई ।।
परमातमा स्वरूपा माता। हो प्रसन्न अभ्यूदय दाता ।।
महिषासुर सेना संहारिनि। क्रोध तिहार अकथ दुखहारिनि ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
जापर कृपा मातु की होई। लहै अभ्युदय जन नित सोई ।।

मान, सुयश अरु धर्म दे, माँ देती धन ताहि।
देती दारा, भृत्य, सुत, स्वास्थ्य धान्य मन चाहि।।

सुकृती करहिं कृपा लहि माता। कर्म धर्ममय मुद जगत्राता ।।
ता प्रसाद जा स्वर्ग सुहावन। त्रिभुवन वाञ्छित फलदा पावन ।।
दुर्गा स्मरण सदा भयहारी। मंगल बुद्धि देहि सुखकारी ।।
दारिद दुख-भयहारिणि माता। पर उपकार आर्द्र सुखदाता ।।
जग सुख हेतु असुर संहाती। रण हति असुर लोक निजदाती ।।
निश्चय यही सोचि हे माता। कीन्ह्यो सकल असुर संघाता ।।
शस्त्रप्रहार शत्रु पर कीन्हा। क्यों नहिं देखि भस्म करि दीन्हा ।।
पावन हों खा शस्त्राघाता। उत्तम भाव शत्रु प्रति माता ।।

खड्ग तेज की दीप्ति अरु, प्रभा घनी तिरशूल।
दैत्य आँख कायम रही, नाश न हुई समूल।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्दु खण्ड सम मुख तव माता। देखि दैत्य का नयन जुड़ाता ।।
शील-शमनकारी दुर्वृत्ती। रूप तिहार अचिन्त्य प्रवृत्ती ।।
अतुलनीय माँ विक्रमशाली। दैत्यन हनी बनी विकराली ।।
रिपु प्रति मातु अतुल उपकारा। कहूँ कहाँ तक अकथ अपारा ।।
अनुपमेय है विक्रम माता। वरद, मनोहर रूप सुहाता ।।
निष्ठुर समर, हृदय में दाया। द्वय स्वरूप माँ तेरी माया ।।
शत्रु नाश करि माँ त्रयलोका। दिया परमसुख हनि जगशोका ।।
युद्ध भूमि हति स्वर्ग दिखाया। सकल अरिन को सुख पहुँचाया ।।

दूर कियो माँ सकल भय, उन्मत दैत्यन मार।
नमस्कार है माँ सुनो, तुमको बारम्बार।।

घण्टा, खड्ग, चाप अरु शूला। माँ आयुध रक्षै अनुकूला ।।
पश्चिम, दक्षिण, पूरब सोहै। चण्डिक रक्षक बनि मन मोहै ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
ईश्वरि घुमा त्रिशूलहि भारी। करै दिशा उत्तर रखवारी ।।

सुन्दर और भयङ्कर रूपा। त्रिभुवन महँ जो मातु स्वरूपा ।।
उनसे माँ कीजै रखवारी। देव और भूलोकहि भारी ।।
गदा, शूल अरु खड्ग विराजैं। कर पल्लव जो अस्त्रहि साजैं ।।
करहु सकल द्वारा रखवारी। चहूँ ओर माता दुखहारी ।।

ऋषि कहते हैं

दुर्गा जगत मातु इस भाँती। पूजित सकल देव की पाँती ।।
नन्दन वन पुष्पहि अरु चन्दन। भली-भाँति पूजा सुर रञ्जन ।।
फिर सब मिलि सभक्ति सुखदायी। धूपहि, दिव्य सुगन्धि चढ़ाई ।।

देवी बोलीं

जो कुछ भी अभिलाष हो, वह सब माँगो आज।
अति प्रसन्न हूँ देवगण, बोलो जो कुछ काज।।

देवता बोले

महिषासुर हन्ती माहेश्वरि। दिया अभीप्सित माँ अखिलश्वेरि ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
यदि प्रसन्न हो फिर भी माता। तो वर सुनो जगत सुखदाता ।।

जब-जब होइ आपदा भारी। होउ प्रकट रक्षहु असुरारी ।।
जो नर नित माता तोहि ध्यावै। वैभव वित्त समृद्धी पावै ।।
धन, दारा अरु सम्पति नाना। माँ प्रसन्न हो दीजै दाना ।।

ऋषि कहते हैं

निज अरु जगत हेतु सब देवा। की प्रसन्न जननी करि सेवा ।।
हे राजन! 'तथास्तु' कह माता। अन्तर्धान हुई सुख दाता ।।
पुराकाल इस भाँति सुहावन। देवगात्र प्रकटी माँ पावन ।।
भूपति! यह सब कथा उदारा। कही जगत हित अति विस्तारा ।।
पुनः देव उपकारिणि जननी। गौरी देह प्रकट जगभरनी ।।
शुम्भनिशुम्भ दैत्य भयकारी। त्रसित देव माँ पुनः पुकारी ।।

सुनो यथावत वह कथा, मैं कहता मुद खानि।
जो सुनि जग में नर बनत, अहोभाग्य सुख दानि।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

卐

पाँचवाँ अध्याय

देवगणों द्वारा देवी की स्तुति, चण्ड-मुण्ड द्वारा अम्बिका के रूप की प्रशंसा, शुम्भ द्वारा दूत भेजना तथा दूत का निराश लौटना

ध्यानम्

घण्टा, मूसल, शङ्ख, हल, धनुष, बाण अरु शूल।
चक्र सहित कर में धरैं, नित जननी सुख मूल।।
शरदकाल शशि भाँति है, जिसकी मनहर कान्ति।
जो त्रयलोकाधार हैं, शुम्भ-निशुम्भ विदान्ति।।
गौरीदेह समुद्भवा, सरस्वती जगमूल।
चित दे भजता सुत तेरा, हो जा माँ अनुकूल।।

ऋषि कहते हैं

शुम्भ निशुम्भ गर्व से माता। पुराकाल दानव विख्याता ।।
यज्ञभाग देवों से छीना। त्रिभुवन राज्य इन्द्र से लीना ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वरुण, इन्दु, यम, सूर्य, समीरा। अग्नि, कुबेर पराजित वीरा ।।
स्वर्गलोक असुरहिं, अधिकारा। मारि-मारि सब देव निकारा ।।
च्युत राज्यहिं, अपमानित देवा। अजिता माँ ध्यावा करि सेवा ।।
अम्ब प्रदत्त पूर्व वरदाना। सोचि देव अतिशय सुखमाना ।।
आपत्ति काल करब रखवारी। कहा पूर्व जो माँ दुखहारी ।।
यह विचारि हिमराज सुहावन। गये तुरत देवी को ध्यावन ।।

देवता बोले

नमः देवि जगपालिनी, नमः शिवा जगदम्ब।
भद्रा प्रकृति नमः जननि, विनवत सनियम अम्ब।।

रौद्रा - नित्या - गौरी - धात्री । पुनः पुनः प्रणाम सुखदात्री ।।
ज्योत्स्ना, चन्द्ररूपिणी माता। नमः सतत, सुखदा जगत्राता ।।
वृद्धि, सिद्धि-रूपा कल्यानी। नमः शरणपालकमय कानी ।।
नैर्ऋत्या, शर्वाणि नमामी। नमो राजलक्ष्मी मुदकामी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्गा, दुर्गपार अरु सारा। सर्वकारिणी, ख्याति, अपारा ।।
धूम्रा, कृष्णा, सतत नमामी। रक्षा करो हे माँ मुदगामी ।।
सौम्य, रौद्र जो रूप सुहाता। सतत प्रणाम उसे जग माता ।।
और प्रणाम जगत आधारा। कृती देवि माँ बारम्बारा ।।

सब जीवन महँ व्याप्त जो, हरिमाया के नाम।
नमः नमः उस मातु को, बारम्बार प्रणाम।।

सब जीवन महँ बुद्धी रूपा। संस्थित जो जगदम्ब अनूपा ।।
नमस्कार सोइ देवि सुनामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सर्वजीव महँ बस जो देवी। निद्रा रूप धरे सुख सेवी ।।
नमस्कार सोइ देवि ललामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
क्षुधा रूप संस्थित जगत्राता। सर्वभूत महँ जो जग माता ।।
नमस्कार सोइ माँ सतगामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्व जीव महँ छाया रूपा। स्थित जो है देवि स्वरूपा ।।
नमस्कार सोइ माँ मुदकामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सर्वभूत महँ शक्ति स्वरूपा। जगदम्बा जो बसै अनूपा ।।
नमस्कार सोइ मातु सुनामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
तृष्णा रूप जीव महँ जोई। संस्थित जो देवी नित होई ।।
नमस्कार सोइ माँ मुदकामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
क्षान्ति रूप जो माँ सुखदाई। सर्वभूत संस्थित अति भाई ।।
नमस्कार सोइ माँ शुभगामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।

सब जीवों में व्याप्त जो, जाति रूप अभिराम।
नमः नमः उस मातु को, बारहि बार प्रणाम।।

सर्वभूत महँ लज्जा रूपा। जो जगदम्बा बसै अनूपा ।।
नमस्कार सोइ मातु ललामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सर्वजीव महँ शान्ती रूपा। जगत जननि जो बसै स्वरूपा ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
नमस्कार सोइ माँ अभिरामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।

संस्थित जो माँ श्रद्धा रूपा। सब जीवन महँ जगत स्वरूपा ।।
नमस्कार सोइ मातु अकामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
कान्ति रूप संस्थित जो माता। सब जीवों में जग सुखदाता ।।
नमस्कार सोइ देवि सुकामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
संस्थित लक्ष्मी रूप सुहावनि। सब जीवन महँ जो मनभावनि ।।
नमस्कार सोइ मातु अनामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सब जीवन महँ वृत्ती रूपा। संस्थित जो जगदम्ब अनूपा ।।
नमस्कार सोइ मातु सुकामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
स्मृति रूप संस्थिता जोई। सर्वभूत महँ जो नित होई ।।
नमस्कार सोइ माँ अभिरामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सब जीवन महँ जो सुखदाता। दया रूप धरि संस्थित माता ।।
नमस्कार सोइ माँ सद्गामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।

सर्व जीव में जो बसी, तृष्टि रूप सरनाम।
नमः नमः उस मातु को, बारहि बार प्रणाम।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संस्थित मातृ रूप जो देवी। सब जीवन महँ जो सुखसेवी ।।
नमस्कार सोइ मातु सुनामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सर्वजीव महँ भ्रान्ति स्वरूपा। संस्थित जो देवी का रूपा ।।
नमस्कार सोइ मातु अकामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सकलभूत अरु इन्द्रिय सारी। अधिष्ठात्रि की महिमाधारी ।।
नमस्कार सोइ माँ अभिरामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
चेतन रूप व्याप्त जगमाता। संस्थित जो अतिशय सुखदाता ।।
नमस्कार सोइ माँ जगनामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।

इन्द्र सहित सब देवता, जिसका करते ध्यान।
पुराकाल में इष्ट पा, सो माँ दे कल्यान।।
हनें सकल मम आपदा, वह जगदम्बा आज।
हम निराश शरणागता, राखें माता लाज।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दैत्योद्भत सन्तप्त हम, करते जाहि प्रणाम।
भक्ति नम्र जन दुख शमन, जो करती सुखधाम।।
माता सोई दुख हरैं, देवैं शुभ कल्यान।
निःसहाय हम देवगण, माता दें सम्मान।।

ऋषि कहते हैं

मेधा ऋषि कह सुरथ नरेशा। अगली कथा सुनहु अवशेषा ।।
देव विनय सुनि गौरी मायी। गङ्गा स्नान हेतु तहँ आयी ।।
पूछा अत्र काहि गुणगाना। करते हो मिल देव सुजाना ।।
उमा शरीर कोश फिर माता। शिवा प्रकट बोली सुखदाता ।।
शुम्भ-तिरस्कृत, निशुम्भ पराजित। सकल देव मण्डलि यह राजित ।।
हो एकत्रित विनती मोरी। करैं सकल मत बनिये भोरी ।।
अम्बिक उमा देह उद्भूता। ख्याति कौशिकी जगत प्रभूता ।।
मातु कौशिकी उद्भव कारण। काली बनी उमा जगतारण ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुम्भ निशुम्भहि भृत्य दोउ, चण्ड-मुण्ड तहँ आय।
मनहर अम्बिक रूप तहँ, देखा बरनि न जाय।।

फिर वे गये शुम्भ के पासा। मन में लिये मनोहर आशा ।।
कहा अतीव मनोहर रूपा। नारी हिमगिरि करत अनूपा ।।
देवि स्वरूप अनूप सुहावन। अद्वितीय है जग में पावन ।।
जानहु कौन देवि हैं स्वामी। हैं ग्रहणीय परम अभिरामी ।।
नारि-रत्न हर अङ्ग सुहावन। दिव्य प्रभा करती दिशिपावन ।।
हिमगिरि पर अब भी छवि छाजे। दैत्यराज तहँ देवि बिराजै ।।
यदि चाहौ देखौ सुखदायी। सञ्चय वह है सकल निकायी ।।
हय, गज, मणि, रत्नादि अनूपा। वस्तु सकल घर दानव भूपा ।।

ऐरावत, उच्चैश्रवा, अरु तरु पारीजात।
लिया इन्द्र से आपने, महिमा तव विख्यात।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रत्न सुयुक्त यान अद्भूता। हंसजुता शोभाका पूता ।।
अति सुन्दर वह ब्रह्म विमाना। सोहै अङ्गन तव जनु शाना ।।
किञ्जल्किनी सुशोभित केसर। नहि कुम्हिलाहिं कमल जेहि बेसर ।।
सागर भेंट कीन्ह शुभमाला। परम सुहावन जो अति भाला ।।
महापद्म निधि है गृहभायी। इन्द्र भवन से तव घर आयी ।।
वर्षा करहिं सुवर्ण सुहावन। वरुण छत्र तव घर अति पावन ।।
प्रजापती सुन्दर रथ भारी। तव अधिकार स्वामि! देवारी ।।
उत्क्रान्तिदा शक्ति तव पासा। करती जो नित शत्रु विनाशा ।।

सागर रत्न समग्र अरु, वरुण पाश जो ख्यात।
सोहत भ्राता घर सब, जो निशुम्भ विख्यात।।

अग्नि स्वतः करि शुद्ध सुहावन। दीन्ह वस्त्र द्वय तब अति पावन ।।
इस प्रकार हे प्रभू सुरारी। सञ्चय कीन्ह रत्न बहु भारी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारी-रत्न देवि जो सोहै। अति कल्याणमयी मन मोहै ।।
क्यों न करै घर प्रभू सुहावन। अतिशय सुन्दर जो मनभावन ।।

ऋषि कहते हैं

चण्ड मुण्ड की बात सुन, शुम्भ भेजकर दूत।
सन्देशा सुग्रीव से, कहलाता अद्भूत।।
बना-बना कर बात तूँ, कहना दूत अनूप ।
नारी हो खुश जिस विधि, आये वह जेहि रूप।।
शैल देश शोभित परम, जहाँ देवि आसीन।
पहुँच दूत कहने लगा, मधुर वचन शालीन।।

दूत बोला

देवी शुम्भ जो दैत्यन राजा। त्रिभुवन जाकी कीरति छाजा ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
ताकर मैं हूँ दूत पठाया। यहाँ कछुक सन्देशा लाया ।।

हो परास्त कोइ वचन न टालैं। जाकर सब सुर आज्ञा पालैं ।।
सोइ शुम्भ बलवान संदेशा। देवी सुनहु विना अंदेशा ।।
त्रयलोकहि अधिकार सुहावन। पौरुष से अधीन सुर पावन ।।
भोगूँ पृथक-पृथक मैं भोगा। यज्ञ भाग का सुख संयोगा ।।
जो-जो जग वर रत्न सुपावन। सब मेरे बस है मनभावन ।।
हस्ती रत्न इन्द्र-ऐरावत। लिया छीन मम घर है भावत ।।

सिन्धु मथन से प्राप्त जो, उच्चैश्रवा महान्।
चरण पड़े अर्पित किया, उसे देव बलवान्।।

रत्नभूत जो और पदारथ। अपना लियो कीन्ह पुरुषारथ ।।
नाग, देंव, गन्धर्वहिं हारे। भागे-भागे फिरहिं विचारे ।।
नारी-रत्न, अनूप सुहावनि। मानूँ तुम्हें देवि मनभावनी ।।
देवी हम हैं रत्न सुभोगी। हो जाओ मम बनि सुख भोगी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुज निशुम्भहिं या मम पासा । आओ देवि यही अभिलाषा ।।
अतुलनीय ऐश्वर्य सुहावन । फिर तब बनै जगत अति पावन ।।
यह निज बुद्धि सोचि तत्काला । मम पत्नी बनु सुन्दरि बाला।।

ऋषि कहते हैं

दुर्गा मङ्गलमूल जो, धारक जग विख्यात।
मुसकायी गम्भीर अति, बोलीं फिर कुछ बात।।

देवी ने कहा

दूत कहा तुम सत्य सुहाई। रंचमात्र मिथ्या नहिं भाई ।।
त्रयलोकहि अधिपति हैं शुम्भा। तादृश बल सम्पन्न निशुम्भा ।।
अल्प बुद्धि कारण हे भाई। इक प्रण कीन्ह पूर्व दुखदाई ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
कैसे मिथ्या होइ हमारा। तद विषयक वह पूर्व विचारा ।।

सुनो प्रतिज्ञा जो हम कीन्हा। अल्प बुद्धिवश यह दुःख लीन्हा ।।
दर्प चूर करि मम संग्रामा। जो जींते अतुलित बलधामा ।।
मम समान जो जग बलवाना। वह भर्ता मम यह मनमाना ।।
शम्भु निशुम्भ जीत लघु बाला। पाणीग्रहण करैं तत्काला ।।

दूत बोला

देवि घमण्ड भरी हुई, बातें तव विकराल ।
होता है ताजुब मुझे, लखि घमण्ड की ज्वाल।।

है त्रयलोक कौन बलवाना। देखि न शुम्भ निशुम्भ डराना ।।
अन्य अनेक दैत्य बल धारे। ठहरि न सकैं देव रन सारे ।।
तुम अकेलि नारी फिर कैसे। साहस करती मुद मन ऐसे ।।
इन्द्र आदि अतुलित बलधारी। भागइ देखि शुम्भ भयकारी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताहि समक्ष नारि तुम अबला। जाओ मत वे जङ्गहि प्रबला ।।
कहा मानि लो मम हे देवी। चलो पास बनिये सुखसेवी ।।
केश पकड़ घसीट तव भारी। जाओगी खो लज्जा सारी ।।
तब देवी तव गौरव कैसा। होगा समझ लीजिए ऐसा ।।

देवी ने कहा

शुम्भ निशुम्भ महान हैं, कहते हो तुम ठीक।
नासमझीवश मैं किया, जो प्रण वह नहिं नीक।।
जाओ तुम अब क्या करूँ, सादर कहना जाय।
करै वही जो कुछ उचित, दैत्यराज मन भाय।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छठवाँ अध्याय

धूम्रलोचन-वध

ध्यान

नागराज आसीन जो, अतुलित जिसकी शान।
भैरव अङ्क निवासिनी, पद्मावति का ध्यान।।
त्रय नेत्रा, माला कमल, धारी कुम्भ कपाल।
फण-मणि देह सुहावनी, सूर्यतेज सा भाल।।
अर्द्धचन्द्र शोभित मुकुट, जन रक्षक शुभ नाम।
माता हो अनुकूल नित, करें भक्त का काम।।

ऋषि कहते हैं

अति अमर्ष दूतहिं को भयेऊ। दैत्यराज से जा सब कहेऊ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
कुपित हुआ तब दैत्य सुरारी। बुला धूम्रलोचन दुखकारी।।

कहा तुरत सेना ले जाओ। गहिकरि केश घसीटत लाओ ।।
लावहु तुरत घसीटत दुष्टा। बनती है जो अतिशय पुष्टा ।।
सुर, गन्धर्व यक्ष जो कोई। आवै तहाँ मारना सोई ।।

ऋषि कहते हैं

साठि सहस्र सैन्य ले भारी। चला धूम्रलोचनहि सुरारी ।।
हिमगिरि जहाँ देवि आसीना। वहाँ पहुँच गर्जा मतिहीना ।।
कहा निशुम्भ-शुम्भ आदेशा। उनके पास चलहु तजि देशा ।।
पालन करहु मुदित मन ताही। केशाकर्षण करूँ न जाही ।।

देवी बोलीं

दैत्यराज सेनापति, सैन्य युक्त, बलवान।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
ले चलने की बात सुन, मैं होती हितज्ञान।।

ऋषि कहते हैं

सुनत धूम्रलोचन भयकारी। दौड़ा अति क्रोधातुर भारी ।।
तब अम्बिका कीन्ह हुङ्कारा। तामें असुर भस्म करि डारा ।।
असुर सैन्य भरि क्रोध अतीवा। शक्ति, कुठार, बाण बेसीवा ।।
ले तुरतहि तहँ कीन्ह प्रहारा। बिना विचार देवि पर मारा ।।
माँ वाहन वर सिंह विशाला। गर्जि खाइ असुरन बनि ज्वाला ।।
ओठ दाढ़ि, जबड़ा अरु पञ्जा । मारि-मारि सेना की खञ्जा ।।
फाड़ा नख से उदर कराला। थप्पड़ मारि गात विकराला ।।
हिला-हिला गर्दन कर बाला। भुजा, मुण्ड तुरतहिं बहुघाला ।।

कितने दानव पेट को, तुरत दिया वह फाड़ि।
चूसा रक्त वहीं सुनो, दाँत भयङ्कर गाड़ि ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवी सिंह सैन्य संहारा। भरा क्रोध असुरन बहु मारा ।।
हना धूम्रलोचन को माता। और सिंह सेना संघाता ।।
सुना शुम्भ जब यह आख्याना। फड़का अधर क्रुद्ध बलवाना ।।
चण्ड-मुण्ड को आज्ञा दीन्हा। लाओ पकड़ि युद्ध, जो कीन्हा ।।
पकड़ी केश या बाँधी गाता। ले आओ सेना दुखदाता ।।
लाना हो यदि संशयकारी। तो देना उसको तहँ मारी ।।
विविध अस्त्र अरु सैन्य प्रयोगा। हतहु जाइ जो असुरन रोगा ।।
मारि सिंह अरु दुष्टा मारी। आवहु शीघ्र करहु तैयारी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सातवाँ अध्याय

चण्ड-मुण्ड-वध

ध्यानम्

ध्याता हूँ मातङ्गि जो, रत्नासन आसीन।
शुक मञ्जुल रव जो सुनत, होकर अति तल्लीन।।
श्याम वर्ण की काय युत, पङ्कज पर इक पाद।
अर्द्धचन्द्र है भाल पर, जो नित हरत विषाद।।
कह्लारहि के पुष्प का, माला धारें मात।
वीणावादिनि, अङ्ग में, चोली कसी सुहात।।
रक्त-वस्त्र धारण किये, शङ्ख पात्र है हाथ।
हल्की सी मुख मधु नशा, शोभित बेंदी माथ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋषि कहते हैं

चण्ड-मुण्ड तब आज्ञा पाई। सेना चतुरङ्गिनी सजाई ।।
अस्त्र-शस्त्रमय सकल सुरारी। पहुँचे हिमगिरि पर भयकारी ।।
कञ्चन शैल शृङ्ग पर राजै। सिंहोपरि देवी सुख साजै ।।
तहँ सुमन्द देवी मुसकाहीं। देखत असुर जरहिं मनमाहीं ।।
सभी दैत्य तत्पर हो धाये। पकड़न हित उद्योग बनाये ।।
तानि-धनुष, तलवार सम्भारी। दैत्य खड़े देवी ढिग भारी ।।
शत्रुन पर अति क्रोध विशाला। क्रोध जनित अम्बिक मुखकाला ।।
भौंह वक्र भइ अति विकराला। काली प्रकट हुई तेही काला ।।

लिये पाश, तलवार अरु, लौहदण्ड विकराल।
व्याघ्र चर्म परिधानमय, नरमुण्डों की माल।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मांस सूख तन, हड्डी ढाँचा। लागइ गात भयङ्कर साँचा ।।

रक्त-धँसी आँखें मुख भारी। लपलपाति जिह्वा भयकारी ।।
गूँजइ दिशा गर्ज विकराला। इधर-उधर दौड़इ भयज्वाला ।।
खाइ असुर सेना तहँ काली। बनी तुरत तत्क्षण विकराली ।।
भक्षण करइ बढ़हि जब काली। त्रहि-त्राहि गूँजै रव खाली ।।
अङ्कुशधारी, पार्श्वक, योधा। गजन सघण्टा धरि करि क्रोधा ।।
इक कर गहै, डालि मुख खाई। बडी भयावह देति दिखाई ।।
रथी सैन्य हय, रथ सह खाई। सारथि पकड़ै लेइ चबाई ।।

पैरों से कुचला कछू, कुछ उर धक्का मार।
गला दबा अरु केश धरि, कछुक कीन्ह संहार।।

अस्त्र-शस्त्र रिपु के भयकारी। मुख डालइ अरु पीसइ सारी ।।
रौंद भगा अरु कुछ खा डाली। सैन्य दुरात्मन को माँ काली ।।
खड्गहिं से कछु असुरन मारी। लौहदण्ड कुछ जान निकारी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ को विकट भयङ्कर दाँता। अग्रभाग कुचला तहँ माता ।।
देखि क्षणहिं सेना संहारा। दौड़ा चण्ड मातु ललकारा ।।
असुर भयङ्कर मुण्ड जुझारी। बाण चलाया वर्षाकारी ।।
चला चक्र वह अगणित बारा। आच्छादित त्रयनेत्राकारा ।।
चक्र देवि मुख प्रविसै वैसे। घन उदरहिं रवि गोला जैसे ।।

विकट रोष भरि कालि तब, अट्टाहस की घोर।
दमकी काया मातु की, दाँत चमक पा जोर।।

कर ले खड्ग हं उच्चारी। दौड़ चण्ड को खड्गहिं मारी ।।
पकड़ि केश शिर असि से काटी। चण्ड-शरीर मिलायो माटी ।।
मरा चण्ड देखा जब मुण्डा। दौड़ा देवि ओर ले झुण्डा ।।
तब देवी करि क्रोध विशाला। तहँ पर बनी मुण्ड की माला ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
चण्ड-मुण्ड को देवि निपाती। शेष सैन्य भागी भय माती ।।

अट्टहास करि काली घोरा। कर गहि चण्ड-मुण्ड शिर फोरा ।।
कहा चण्डिका निकटहि जाई। अर्पित द्वय शिर तुमको माई ।।
शुम्भ निशुम्भ सुदेवि सुहावनि। युद्ध-यज्ञ मारहु तुम पावनि ।।

ऋषि कहते हैं

चण्ड-मुण्ड शिर कालिका, जब ले आई पास।
कहा मधुर स्वर में तभी, चण्डी भरि उल्लास।।
चण्ड-मुण्ड शिर पास मम, लायी हो तूँ देवि।
अतः ख्याति हो जगत तव, चामुण्डा शुभ सेवि।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आठवाँ अध्याय

रक्त-बीज-वध

ध्यानम्

अणिमा आदिक सिद्धिमय, किरणों से आवृत्त ।
अम्ब भवानी ध्यान में, मम मन रहे प्रवृत्त ।।
अरुण वरण है गात शुभ, नयनन करुण तरङ्ग ।
कर में अङ्कुश पाश अरु, धनुष वाण शुभ रङ्ग ।।

ऋषि कहते हैं

चण्ड मुण्ड अरु सेना भारी। सब को जब देवी संहारी ।।
हुआ शुम्भ मन क्रोध विशाला। सेना आज्ञा दीन्ह कराला ।।
सकल सैन्य दैत्यों की भारी। युद्ध हेतु फिर कीन्ह तयारी ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
चलैं ससैन्य छियासी नायक। वीर शिरोमणि जो सब लायक ।।

कम्बु नाम नायक चौरासी। यात्रा करैं सकल बलराशी ।।
कोटिवीर्य कुल वीर पचासा। नायक धौम्रकुलहिं शत खासा ।।
मम आज्ञा ले सेना भारी। तुरत कूँच की करैं तयारी ।।
दौर्हृद, कालकेय अरु कालक। मौर्य चले तुरतहिं अरिघालक ।।

भीषण शासक शुम्भ तब, ऐसा करि आदेश।
युद्ध हेतु खुद भी चला, सेना लिये विशेष।।

आती हुई सैन्य दुखकारी। चण्डिक जब देखा अति भारी ।।
तब भीषण की धनु टंकारा। भूमि-गगन तक रव गुञ्जारा ।।
अम्बिक घण्टा, सिंह दहाड़ा। लगइ प्रबल अति कपै पहाड़ा ।।
सकल दिशा केहरि हुङ्कारा। घण्टा ध्वनि औ धनु टङ्कारा ।।
काली आनन कीन्ह कराला। सुनतहिं वह रव अति विकराला ।।
असुर सैन्य सुनि सुमुख निनादा। पहुँची तहँ बिनु किये विवादा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चण्डिक,सिंह कालि तत्काला। घिरीं चहूँ दिशि दैत्य कराला ।।
तबही सुनहु सुरथ भूपाला। असुर विनाश देवहित पाला ।।

विविध देव की शक्ति-फिर, निकलि गात तदरूप।
अद्भुत विक्रम बल सहित, पास चण्डि बहु भूप।।

कार्तिकिय, शिव, ब्रह्म, कुबेरा। हरि की शक्ति-पहुँच तेहि बेरा ।।
जिस सुर का जो वाहन रूपा। वेष-भूष साधन अनुरूपा ।।
आयीं शक्ति-धरे वह रूपा। असुर युद्ध के हेतु अनूपा ।।
अक्ष-कमण्डल शोभित माता। हंस विमान चढ़ीं सुख्याता ।।
प्रथमहिं तहाँ पहुँचि ब्रह्मानी। मन मोहैं माँ सुषमाखानी ।।
महादेव शक्ती फिर आयी। वृषभारूढ़ जगत सुखदायी ।।
व्यालहि कङ्कण पहने माता। चन्द्र, त्रिशूल धारिजगत्राता।।
धरें शक्ति कर में कौमारी। वर मयूर आसन सुखहारी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिकेय की शक्ति जो, जगदम्बिका सुजान।
आयीं माँ रणभूमि में, जन के ही कल्यान।।
शारंग धनुष शङ्ख अरु खड्गा।गदा शक्ति-कर गहे अभङ्गा ।।
विष्णु शक्ति माँ गरुड़ासीना। आई तहँ जो युद्धप्रवीना ।।
यज्ञवराह रूप धारी हरि। शक्ति-वराह रूप आयी धरि ।।
नारसिंहि शक्ती नरसिंहा। आई वहाँ तुरत चढ़ि सिंहा ।।
गर्दन बाल सिंह जब झटकइ। जनु नभ के तारे भू पटकइ ।।
गजराजहि चढ़ि ऐन्द्री आयी। सहसनेत्र कर वज्र सुहायी ।।
मध्य देव शक्तिन महँ बोले । वहाँ चण्डिका से प्रभु भोले ।।
मम प्रसन्नता के हित कारण। सत्वर बनी असुर संहारण ।।
देवि भयङ्कर गात से, चण्डिक-शक्ति कराल।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
शत निनादिनी शिवासी, प्रकटी फिर तत्काल ।।

धूम्रजटिल जो शम्भू छाजा। अपराजिता कहा कछु काजा ।।
शुम्भ-निशुम्भ पास भगवाना। बनकर दूत शीघ्र है जाना ।।
द्वय अरु इतर दैत्य जो कोई। प्रभु सन्देश कहहु यह जोई ।।
दैत्यों! यदि है जीवित रहना। बसहु पताल यही बस कहना ।।
मिलइ यज्ञ भागहि सब देवैं। इन्द्र त्रिलोक राज सुख सेवैं ।।
बलघमण्ड यदि रण अभिलाषी। नहिं कल्याण मान सतभाषी ।।
कच्चा मांस योगिनी खाहीं। जङ्ग मध्य तब तृप्ती लाहीं ।।

शिवदूती विख्यात है, जग में माता नाम।
प्रभु शिव से जगदम्ब तहँ, लिया दूत का काम।।

जब शिव देवी बात सुनायी। महादैत्य भरि क्रोध जुहायी ।।
कत्यायनी विराजहि जहँवा। बढ़े दैत्य उस दिशि में तहँवा ।।
भरे अमर्ष नयन जनु रक्ती। मारै बाण, ऋष्टि अरु शक्ती ।।
तब देवी करि धनु टङ्कारा। छोड़ा शर भयङ्कराकारा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दैत्य, शूल, शर, शक्ती फरसा। विमुख हुए खा माँ शरवरषा ।।
माँ काली करि शूल प्रहारा। अग्र हुई बहु दैत्य विदारा ।।
विचरहिं समरभूमि में काली। दैत्यों की सेना को घाली ।।
मारहिं लौह दण्ड तत्काला। काली बनी अजब विकराला ।।

ब्रह्माणी सब ओर जा, छिड़क कमण्डलु नीर ।
अरि विक्रम अरु ओज को, हरण किया धरि धीर ।।

वैष्णवि, माहेश्वरि, कौमारी। चक्र, त्रिशूल, शक्ति-संहारी ।।
इन्द्राणी जब वज्र प्रहारा। बहै रुधिर की शत-शत धारा ।।
दाढ़, अग्र, थूथुन अरु चक्रा। हनै बराही जो अति वक्रा ।।
नारसिंह नख शत्रु विदारी। रण अरि खाती प्रलयङ्कारी ।।
सकल दिशा आकाश गुजावै। सिंहनाद करि दैत्य डरावै ।।
अट्टहास शिवदूती कीन्हा। गिरत असुर समूह दुःख भीना ।।
फिर शिवदूती करै अहारा। मारि मारि के ग्रास पसारा ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
दैत्यन-मर्दन दैत्य निहारी। शेषप्राण भागे अघधारी ।।

रक्त बीज देखा जभी, सेना छोड़त युद्ध।
देविन त्रासन हेतु तब, आया रण अति क्रुद्ध।।

रक्तबीज का विकट शरीरा। घायल था जनु पुञ्जहि धीरा ।।
रक्त बूँद जो चुवइ शरीरा। दूसर दैत्य बनै बलवीरा ।।
फिर राक्षस कर गदा सम्हारी। ऐन्द्री साथ युद्ध करि भारी ।।
इन्द्राणी करि क्रोध अपारा। रक्त-बीज पर वज्र प्रहारा ।।
वज्राघात दैत्य विकराला। चुवत रक्तमय काम विशाला ।।
रक्त-बूँद से निर्मित योधा। धावैं शस्त्र लिए करि क्रोधा ।।
जितनी रक्त-बूँद महि छायी। उतने दैत्य बनै दुखदायी ।।
रक्त-बीज सम अति बलवाना। वीर्यवान अरु विक्रमवाना ।।
लगे करन फिर रक्त-प्रहारा। रक्तोत्पन्न दैत्य भयकारा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वज्रपात से शिर फुटा, बह्यो रक्त की धार।
रक्त-बीज के रक्त से, निरम्यो असुर हजार।।

चक्र गदा से कीन्ह प्रहारा। ऐन्द्री वैष्णवि क्रुद्ध अपारा ।।
गिरै खून जो चक्राघाता। सहस दैत्य जनमे सम गाता ।।
रक्त-बीज भरि क्रोध विकारा। सब देविन पर गदा प्रहारा ।।
माहेश्वरि, वराहि, कौमारी। शूल खड्गशक्ति अरि भारी ।।
बहुत बार खा शक्ती शूला। निर्माता बहु राक्षस मूला ।।
रुधिर बूँद राक्षस निर्माता। रण महँ विकट भयङ्कर बाता ।।
सकल देव करि भय अनुभूती। मन में सुमिरहि माँ शिवदूती ।।
देखि उदास देव जगत्राता। चण्डी कहा कालिका माता ।।

चामुण्डा अब तुरत तुम, बगराओं मुख आज।
इस प्रकार का रूप धरि, करो देवि सुर काज।।

रक्त बिन्दु जो शस्त्राघाता। ता उत्पन्न दैत्य कुख्याता ।।
उतावले मुख में तिन डाली। रण में घूमि, खाहु सब काली ।।
क्षीण रक्त दैत्यहि का कीजै। जिससे स्वयं असुरदल छीजै ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार भक्षण करु काली। जन्म दैत्य न अब भयशाली ॥
यह विधि कहि मारा तहँ शूला। रक्त-बीज को फिर जग मूला ॥
रुधिर प्रवाह दैत्य का जोई। काली पान करइ तहँ सोई ॥
जननी जो जगती आधारा। तेहि पर राक्षस गदा प्रहारा ॥
गदापात नहिं चण्डि सताया। रक्तबीज घायल दुख पाया ॥
रक्त-पान राक्षस का कीन्हा। मुख उत्पन्न दैत्यमल दीन्हा ॥

रक्त- बीज का रक्त-जब, काली करती पान।
चण्डी मारा वज्र अरु, ऋष्टि,खड्ग वर बान ॥

शस्त्रयूथ से आहत वीरा। रक्त-बीज बिनु रक्त-अधीरा ॥
गिरा अवनि पर अति विकराला। महादैत्य लहि-दुःख कराला ॥
सुरन मिला अति हर्ष सुहावन। भूपति सुनहु कथा वह पावन ॥
रक्त-पान उन्मत्त मदमाता। करहिं नृत्य अतिशय मनभाता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

卐

नौवाँ अध्याय

निशुम्भ-वध

ध्यानम्

रूप अर्द्ध नारीश्वरहिं, श्री विग्रह मुदधाम।
होता हूँ मैं शरण में, मङ्गल दें अभिराम।।
बन्धूकहि के पुष्प सा, अरु सुवर्ण की भाँति।
रक्त-पीतमय वर्ण की, जिनकी क्रान्ति सुहाति।।
बाहु दण्ड में जो धरैं, शोभित अक्षसुमाल।
वरद मुद्र, पाशाङ्कुशहिं, धरे जगत के पाल।।
अर्द्धचन्द्र भूषण सदा, तीन नेत्रमय शोभ।
करै भक्त कल्याण नित, निरखि जाहि मन लोभ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा ने कहा

कहा सुरथ है ऋषिवर पावन। अद्भुत देवी चरित सुहावन ।।
रक्त बीज को देविन मारा। शुम्भ-निशुम्भ कियो जो कारा ।।
अगली कथा कहहु सुखदायी। जो देवन कर कष्ट नशायी ।।

ऋषि कहते हैं

रण महँ रक्त-बीज जब मारा। शुम्भ-निशुम्भ सक्रुद्ध अपारा ।।
भरि अमर्ष ले सैन्य प्रधाना। देवी ओर निशुम्भ प्रयाना ।।
आगे-पीछे पार्श्व सुभागा। असुर अनेक क्रोध मुख रागा ।।
पराक्रमी वह राक्षस धीशा। बना हुआ था जो जगदीशा ।।
शुम्भ ससैन्य युद्ध में आया। देविन के प्रति क्रोध सताया ।।
शुम्भ-निशुम्भ घोर संग्रामा। शुरू किया अतिशय भयधामा ।।
वर्षें बाण भयंकर धारा। दोनों दैत्य करहिं अति शोरा ।।
तब चण्डिक काटा शर सारा। निज शर शत्रु शरहिं अपारा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निज शस्त्रों से कीन्ह माँ, शत्रुन अङ्गहि चोट।
शुम्भ-निशुम्भहि के सहित, वहाँ दैत्य जो कोट।।

तब निशुम्भ गहि खड्ग सुढाला। मारा सिंह भाल तत्काला ।।
वाहन चोट देखि दुख भारी। चण्डिक भी तब कीन्ह प्रहारी ।।
मारा देवि क्षुरप्रहिं बानः। हुए खड्ग के टुकड़े नाना ।।
अष्ट चन्दमय राक्षस ढाला। खण्ड-खण्ड करि देवी डाला ।।
असुर तुरत तब शक्ति चलाई। कीन्ह चक्र से द्वय फिर भाई ।।
जला क्रोध में असुर सुरारी। देवी वध हित शूल सम्भारी ।।
किया देवि पर शूल प्रहारा। देवी उसे चूर्ण करि डाला ।।
तब निशुम्भ ने गदा चलाई। माँ त्रिशूल से वह बिनशाई ।।

जब देखा फरसा गहे, राक्षस आता पास।
देवी मारा त्रिशूल से, किया निशुम्भ का नाश।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखा शुम्भ-निशुम्भहिं नाशा। था अतिशय दुख क्रोध विकासा ।।
अम्बिक वध की कीन्ह तयारी। वह आगे बढ़ि देव-दुखारी ।।
वर आयुध ले रथ आसीना। अष्ट भुजामय शुम्भप्रवीना ।।
नभ को व्याप्त किये अति सोहै। देखि अचम्भा वश मन मोहै ।।
माँ भी देखि दैत्य भयकारी। शङ्ख, प्रतिच्चा की रव भारी ।।
घण्टा रव अरि तेज विदारक। सकल दिशा गूँजी भयकारक ।।
भूमि दिशा-दश अरु आकाशा। गूँजी गर्ज सिंह चहुँ पासा ।।
उछलि अकाश कालिका माई। द्वयभुज पृथ्वी पटकि डराई ।।
शब्द भयङ्कर वह अति घोरा। लिया समेट सकल वह सोरा ।।

दायक असुर अमंगलहिं, अट्टहास जब कीन।
शिवदूती अतिशय विकट, भये असुर तब दीन।।

गर्जन सुना शुम्भ जब भारी। क्रोध हुआ मन में भयकारी ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
शुम्भ लक्ष्य करि बोलीं देवी। खड़े रहो अब हे अघसेवी ।।

सकल देव तब मुदित आकाशा। जय-जय कहहिं लिये सुख आशा ।।
शुम्भ तुरत ही शक्ति-चलाई। ज्वलायुक्त - प्रबल दुखदायी ।।
किया दूर लूके से माता। अग्नि-शैल सा जो था आता ।।
राजन सुनहु सुरथ तत्काला। सिंहनाद किय दैत्य कराला ।।
वज्रपात सम वह ध्वनि होई। जीता अन्य सकल रव सोई ।।
देवि शुम्भ चलावहिं बाना। करइँ परस्पर टुकड़े नाना ।।

क्रोध भरी तब चण्डिका, कीन्ह्यो शूल प्रहार।
तुरत शुम्भ धरनी गिरा, मूर्छित देवी मार।।

यहि अन्तर महँ निशुम्भ सचेता। आया युद्ध दनुज बनि नेता ।।
सायक मारि विकट दुखदायल। देवी,सिंह, कालि, करि घायल ।।
दस सहस्र बहु भुजा बनाई। चक्र मारि तोपा तहँ माई ।।
तब दुर्गा माँ शरहि चलाई। चक्र बाण अरि काटि गिराई ।।
क्रुद्ध दैत्य तब चण्डि विदारन। दौड़ा गदा लिये संहारन ।।
गदा विनष्ट चण्डि तब कीन्हा। तुरतहिं शूल दैत्य कर लीन्हा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आता देखि लिये कर शूला। जननि सबेग शूल निज हूला ।।
राक्षस अपर हुआ तब भारी। छाती जब विदीर्ण करि डारी ।।

कहा खड़ी रह देवि को, देवी हँसी ठठाय।
काटा मस्तक खड्ग से, गिरा अवनि मुँह बाय।।

गर्दन कुचल सिंह निज दाढ़ी। खात भयंकर ता जनु बाढ़ी ।।
काली शिवदूती सुखदायी। तहाँ बहुत से राक्षस खाई ।।
शक्ती से विदार कौमारी। अपर दैत्य जो थे दुखकारी ।।
मन्त्रपूत जल से निस्तेजा। केतिक किया ब्रह्माणी तेजा ।।
माहेश्वरि बाराहि अकारा। शूल और थूथुन से मारा ।।
वैष्णवि चक्र चलाय अपारा। बहु दानव टुकड़े करि डारा ।।
ऐन्द्री वज्र अचूक, अपारा। प्रचुर दैत्य तहँ कीन्हा छारा ।।
कालि, सिंह, शिवदूती ग्रासा। कछुक दैत्य, कछु भगे निराशा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

卐

दसवाँ अध्याय

शुम्भ-वध

ध्यानम्

ध्याता हूँ नित हृदय में, कामेश्वरि सुखधाम।
अर्द्ध चन्द्रधारी जननि, शिव शक्ती अभिराम।।
सुन्दर तप्त सुवर्ण सम, नेत्र, चन्द्र, रवि अग्नि।
अंकुश, धनु अरु बाण कर, शूल, पाश मुद मग्नि।।

ऋषि कहते हैं

सुनहु सुरथ राजा दुखहारी। अगली कथा मातु की सारी।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
मरा निशुम्भ बन्धु जो प्यारा। अरु देखा सेना संहारा।।

शुम्भ क्रुपित बोला तत्काला। बल अभिमान घमण्डी बाला ।।
दुष्टा दुर्गा बल अभिमाना। झूठा है यह सब जग जाना ।।
अपर नारि का ले बल भारी। बनी हुई तूँ विस्मयकारी ।।

देवी बोलीं

दुष्ट अकेली मैं जग माहीं। मेरे सिवा जगत कोउ नाहीं ।।
मम विभूतियाँ हैं ये सारी। समा रही हैं गात हमारी ।।
ब्रह्माणी बहु और स्वरूपा। तुरत समाई अम्बिका रूपा ।।
बची अम्बिका शेष अकेली। कहा दुष्ट देखी मम केली ।।

देवी बोलीं

देखा बहु मम यहाँ स्वरूपा। समझो यह सब मेरा रूपा ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
ले समेट उन सब निज माहीं। खड़ी अकेली आरण थाहीं ।।

ऋषि कहते हैं

देवी शुम्भ बीच तत्काला। छिड़ा युद्ध अति विकट कराला ।।
अस्त्र-शस्त्र दारुण भयकारा। दोनों ने तहँ कीन्ह प्रहारा ।।
वर्षा होइ भयानक बाना। देखत धीरज करइ पयाना ।।
देवी दिव्य अस्त्र जो छोड़ा। दैत्य युद्ध महँ उसको मोड़ा ।।
दैत्य अस्त्र जो छोड़ा भारी। नष्ट कीन्ह देवी हुँकारी ।।
शत-शत बान दैत्य फिर मारा। देवी को सचमुच ढकि डारा।।
काटा धनुष क्रोध भरि देवी। देव-मनुज सुखदा मुद सेवी ।।
लिया दैत्य फिर शक्ती भारी। देवि चक्र शक्ती को छारी ।।

चमचमाति सौ चाँद सी, लिये ढाल तलवार।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
देवी पर धावा किया, पुनः शुम्भ हुँकार।।

सूर्य प्रभा सम खड्ग सुढाला। अम्बिक काटि किया विकराला ।।
हय सारथि पहले ही मारा। और धनुष भी पूर्व बिदारा ।।
फिर मुद्गर करले तत्काला। देवी ओर बढ़ा जनु व्याला ।।
काटा मातु उसे जब ताहीं। मुक्का तानि दौड़ माँ पाहीं ।।
मुक्का देवी छाती मारा। थप्पड़ देवी तुरत प्रहारा ।।
असुर गिरा क्षण भर बेहाला। खड़ा हुआ पर तुरत कराला ।।
फिर वह उछलि क्रोध कर भारी। देवी ले जा गगन मँझारी ।।
निराधार तहँ होवै युद्धा। लड़ने लगी अम्ब अति क्रुद्धा ।।

सिद्ध मुनी चिन्ता करत, देखत युद्ध अपार।
दैत्य चण्डिका युद्ध यह, अतिशय विस्मय कार।।

तहँ माँ युद्ध कछुक पल कीन्हा। असुर भयाव पटकि फिर दीन्हा ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
धरणी गिरा असुर वह भारी। माँ वध हेतु उठा भयकारी ।।

आता देखि असुर निज ओरा। मारा मातु शूल अति जोरा ।।
मारा शूल शुम्भ के गाता। गिरा धरणि पर वह दुखदाता ।।
काँपै, शैल द्वीप अरू सागर। गिरा धरा जब राक्षस नागर ।।
मरा दुरात्म जबै वह भारी। हुआ निहाल जगत सुखकारी ।।
उल्कापात, मेघ दुखदायी। हुए शान्त खुशियाली छायी ।।
ठीक मार्ग सरिता सब चलहीं। जगत शुम्भ बिनु सब सुख लहहीं ।।

सकल देव का शुभ हृदय,सचमुच बना निहाल।
मञ्जुल गीत सुनावहीं, गन्धर्वहिं तत्काल ।।
सूर्य प्रभा उत्तम हुई, पावन बहै समीर।
अप्सरानि गन्धर्व की, हुई मुदित तहँ भीर ।।
हुई प्रज्वलित अग्नि फिर, अग्नि शाल सुखखानि।
सकल भयङ्कर नाद सब, शान्त हुए दुखदानि ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्यारहवाँ अध्याय

देवों द्वारा देवी की स्तुति एवं देवी द्वारा देवों को वरदान

ध्यानम्

ध्याता माँ भुवनेश्वरी, जन-रक्षक अभिराम।
बालसूर्य सम प्रभामय, माथे चन्द ललाम।।
तुङ्गकुचा त्रयनेत्र युत, मुख मुस्कान लुभात।
वरदाङ्कुश अरु पाश कर, मुद्रा अभय सुहात।।

ऋषि कहते हैं

वधा गया जब शुम्भ सुरारी। सकल देव मन मुद अतिभारी ।।
अग्नि अग्र शक्रादिक देवा। विनवहिं कात्यायनि करि सेवा ।।
इष्टलाभ मुख चमक सुहावन। जगमगाहिं दिशिबनि अतिपावन ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
शरणागत सुखदा जन तारिणि। हो प्रसन्न माँ जग उद्धारिणि ।।

जगत जननि विश्वेश्वरि देवी। रक्षहु विश्व सदा सुख सेवी ।।
जड़-जङ्गम अधीश्वरी माता। हो प्रसन्न जगती सुखदाता ।।
एकमात्र तुम जग आधारा। सुस्थित अवनि रूप आकारा ।।
अकथनीय बल विक्रम माता। जल स्वरूप जग तृप्ती दाता ।।

वैष्णवि बल सम्पन्न तूँ, माया परा स्वरूप।
मोंहित करती तूँ जगत, मुदित मोक्षदा रूप।।

विद्या सकल स्वरूप तिहारी। जगत नारि तव रूपाकारी ।।
जगदम्बा जगती एकाकी। अस्तुति होवै क्या फिर माँ की ।।
अस्तुति योग्य पदारथ जोऊ। वाणी परे सकल माँ सोऊ ।।
स्वर्ग, मोक्षदा सर्व स्वरूपा। माँ अस्तुति है परम अनूपा ।।
उक्ति और अच्छी क्या माता। हो सकती इससे सुखदाता ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
बुद्धि रूप धरि हृदय बिराजैं। स्वर्ग मोक्षदा जग सुखसाजैं ।।

नमस्कार नारायणि देवी। नमस्कार जग माँ सुख सेवी ।।
कला काष्ठ आदिक शुभ रूपा। फल विधान करती जग रूपा ।।

नारायणी समर्थ जो, जगती उपसंहार।
नमस्कार जगदम्ब हे, तूँ जग सर्वाधार।।

मङ्गलदा मंगलमय माता। नारायणी शिवा मुददाता ।।
पुरुषारथ अरु सिद्धी दाती। शरणागत वत्सल, जनत्राती ।।
त्रयनेत्रा हे गौरी माता। नमस्कार सुखदा, शुभदाता ।।
पालन, सृष्टि और संहारा। शक्ती तव हे जग आधारा ।।
गुणमय, गुण आश्रय जगदम्बा। सनातनी नारायणि अम्बा ।।
नमस्कार हे भाग्य विधाती। जननी अति पावन मुदमाती ।।
आर्त्त, हीन, शरणागत पालक। रक्षा करती जन जनु बालक ।।
नमस्कार नारायणि देवी। जगपीड़ा हारिनि सुख सेवी ।।

हंसयान पर गामिनी, छिड़कत कुश से नीर।
नमस्कार ब्रह्माणि माँ, हरो भक्त, दुख भीर।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अहि, शशि, शूल धारि माहेश्वरि। वृषभासीन नमत अखिलेश्वरि ।।
मुर्ग, मयूर घिरी कौमारी। नमत शक्तिधारी अघहारी ।।
उत्तम आयुध धारिनि माता। शंख चक्र अरु गदा सुहाता ।।
वैष्णवि शक्ति-रूप नारायणि। नमत भक्त मुद हो सुखदायनि ।।
धार्‌यो धरणि दाढ़ वाराही। चक्र लसित कर, नमता ताही ।।
त्रिभुवन रक्षक नरसिंह रूपा। नमता नारायणी स्वरूपा ।।
कुलिश, किरीट भाल शुभकारी। सहस नेत्रमय जन दुखहारी ।।
वृत्रासुर हन्ती नारायनि। नमस्कार भगवति सुखदायनि ।।
दैत्य सैन्य संहारिनि माता। शिव दूती अतिशय सुखदाता ।।

रूप भयङ्कर धारि तब, विकट गर्जना कीन्ह।
नमस्कार नारायणी, जो देवन सुख दीन्ह।।

मुख विकराल दाढ़ि के कारण। मुण्डों की माला उर धारण ।।
नारायणि चामुण्डा रूपा। नमत मुण्ड मर्दिनी स्वरूपा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महा अविद्या, लज्जा, कमला। स्वधा, पुष्टि, श्रद्धा, बुधिविमला ।।
महारात्रि, शुभ ध्रुवा सुहावनि। नमस्कार नारायणि पावनि ।।
मेधा सरस्वती, वर भूती। बाभ्रवि, ईशा अरु शिवदूती ।।
नियता तमसि नरायणि देवी। नमस्कार जननी सुख सेवी ।।
दुर्गा सर्व शक्ति सम्पन्ना। दो रक्षा नहिं बनूँ विपन्ना ।।
सर्वेश्वरि हे सर्व स्वरूपा। नमस्कार जननी शुचि रूपा ।।

तीन नेत्र भूषित बदन, कात्यायनि जगत्रात।
हरौ भीति मंगलप्रदा, नमस्कार शुभगात।।

ज्वालामय लागइ विकराला। मातु त्रिशूल असुर का काला ।।
भद्रकालि माँ तुम्हें नमामी। देहु सदा मुद जग अभिरामी ।।
जो घण्टा अति कान्ती हन्ता। पाप विदारक सुख का कन्ता ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
पाप निवारै जैसे माता। रक्षै घण्टा रव सुखदाता ।।

रुधिर चर्बिमय माँ का खड्गा। मङ्गल करे सदा रह संगा ।।
नमस्कार चण्डिक जगकारी। करहु अभय जन दुःख बिदारी ।।
तुष्टा रोग विनाशिनि जननी। रुष्ट अभीसिप्त को नित हननी ।।
तव आश्रित नहिं बनै विपन्ना। औरों को दें सुख सम्पन्ना ।।

अगणित रूपों में जननि, धर्म द्रोहि संहार।
देवी कर सकता कौन, ऐसा कार्य अपार।।

विद्या, शास्त्र और सब ज्ञाना। सब में तेरा रूप समाना ।।
ममता कुण्ड तमावृत्त भारी। घूमत जग तव लीला सारी ।।
राक्षस, सर्प शत्रु बहु चोरा। दावानल समुद्र घनघोरा ।।
इन महँ करती जन प्रतिपाली। जग रक्षक माँ तव शुभ लाली ।।
जग पालन विश्वेश्वरि करती। विश्वरूप धरि हे जग भरती ।।
विश्वनाथ वन्दित हे माता। दास तेरे जग आश्रयदाता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो जा माँ प्रसन्न शुभमूला। सदा रहो जननी अनुकूला ।।
पाप महामारी दुखदाता। घालहु देवि करहु जगत्राता ।।

पूजनीय परमेश्वरी, वरदा-वर की आश।
विश्वकष्ट हनती जननि, चरण पड़े हैं दास।।

देवी बोलीं

उद्यत हूँ वरदान हित, जो कुछ इच्छा होय।
माँगो वह हे देवगण, दूँगी जगहित सोय।।

देवता बोले

त्रिभुवन की बाधा सकल, शमन करहु जगदम्ब।
सर्वेश्वरि सब मम रिपु, नष्ट करहु नित अम्ब।।

देवी बोलीं

वैवस्वत मन्वन्तर के ही। अट्ठाइसवें युग में ही ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
शुम्भ-निशुम्भ अपर दोउ दानव। देंगे कष्ट देव अरु मानव ।।

तब मैं नन्द गोप गृह माहीं। यशुदा गर्भ होब जग पाहीं ।।
विन्ध्यगिरी मम होगा वासा। दोउ असुर कर करब विनाशा ।।
फिर मैं जग धरि भीषण रूपा। हनब वैप्रचित दानव भूपा ।।
महादैत्य भक्षण तेहि काला। सुनिये देव करब तत्काला ।।
लाल अनार फूल की भाँती। फिर मम बने दन्त की पाँती ।।
मर्त्य, स्वर्ग, नर, देव सुखारी। रक्त-दन्तिका नाम उचारी ।।

मम सुमिरन करि जन सकल, सदा लहैं हिय आश।
मङ्गल,शुभ अरु सुख सकल, करते मुझमें बास।।

वर्षा फिर शत वर्षहिं नाहीं। भये जगत में त्राही-त्राही ।।
स्तुति मुनि जब करिहैं भारी। अयोनिजा रूप दुखहारी ।।
देखब शत नेत्रहिं मुनि ओरा। नाम शताक्षी होगा शोरा ।।
तरह-तरह का जीवन दाता। पैदा करब शाक निज गाता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पालब विश्व सकल दुखहारी। जल न होइ जब तक सुखकारी ।।
शाकम्भरी नाम प्रख्याता। जगती में होगा जगत्राता ।।
महादैत्य जो दुर्गम नामा। उसका भी करि काम तमामा ।।
दुर्गा नाम लहब संसारा। सुनहु देव सब इस अवतारा ।।

भीमकाय धारण किये, सकल राक्षसन भक्ष।
जाय हिमालय पर पुनः, करब मुनिन की रक्ष।।

तब मुनि अस्तुति करिहैं भारी। नत मस्तक सभक्ति-सुखकारी ।।
भीमा देवी ख्याति सुहावन। होगी फिर जग में अति पावन ।।
फिर त्रयलोक उपद्रवकारी। अरुण दैत्य जन्मेगा भारी ।।
अगणित षटपद भ्रमर स्वरूपा। त्रयलोकहिं हित धरब अनूपा ।।
मारब इहि विधि दैत्य सुरारी। भ्रामरि नाम जगत उच्चारी ।।
दानव पीड़ा जब जब होई। तब तब हनब न संशय कोई ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

卐

बारहवाँ अध्याय

देवी के चरित्रों के पाठ का माहात्म्य

ध्याता दुर्गा देवि जो, त्रयनेत्रा जगधार।
विद्युतमय श्री अंग सब, सिंह रूढ़ भयहार।।
लिये ढाल तलवार कर, कन्या सेवहिं जाहि।
अग्निरूपमय माँ, इन्दु धारिनी त्राहि।।
गदा, चक्र, तलवार, धनु, ढाल पाश कर बान।
तर्जनि मुद्राधारिनी, देवी राखैं मान।।

देवी बोलीं

करइ सदा जो मम गुणगाना। हो निर्विघ्न लहै कल्याना।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
मधु-कैटभ महिषासुर नाशा। पढ़इ जो शुम्भ-निशुम्भ विनाशा।।

अष्टमि, नवमि, चतुर्दशि माता। कथा श्रवण फल जग सुखदाता ।।
तिन्हहिं पाप छू सकइ न कोई। आपति पाप जनित नहिं होई ।।
तेहि घर दरिद्रता नहिं आवै। प्रेमि विछोह न उन्हें सतावै ।।
शत्रु, दस्यु, राजा-भयहारी। अस्त्र, अग्नि, जल निर्भयकारी ।।
मन एकाग्र लीन करि भक्ती। मम माहात्म्य पढ़िये भरि शक्ती ।।
दायक है मुद, नित कल्याना। पाठ-पठन अरु जननी ध्याना ।।

सकल महामारी जनित, होत उपद्रव दूर।
त्रयप्रकार उत्पात सब, माता करती चूर।।

सविधि महात्म्य करै जो पाठ। ताकर बनै अजब सा ठाठ ।।
जहँ मम पाठ होइ सुखदायी। बसहुँ तहाँ धरि रूप सुहाई ।।
बलि अरु होम महोत्सव पूजा। पाठ, श्रवण का फल जग गूँजा ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
पूरा मम चरित्र यहि भाँती। देइ सकल सुख, कीर्ति सुहाती ।।

विधि जानइ अथवा अनजाना। बलि पूजा होमादि विधाना ।।
जो नर करै करूँ स्वीकारा। तिनको मिलई मंगलकारा ।।
शरद काल जो पूजा भारी। माँ महात्म्य तव बहु सुखकारी ।।
धन धान्यादि पुत्र सम्पन्ना। जनहिं बनाऊ मुक्त-विपन्ना ।।

प्रादुर्भाव महात्म्य मम, युद्ध पराक्रम जोय।
श्रोता जन निर्भय बने, लहै परम सुख सोय।

मम महात्म्य श्रोता सब कोई। रिपु विहीन मङ्गलमय होई ।।
आनन्दित कुल उसका सारा। सदा लहहिं मम कृपा अपारा ।।
शान्ति कर्म महँ अरु दुःसपना। ध्यान लगा माता को जपना ।।
ग्रह पीड़ा जब दे दुख भारी । सुनिये यह चरित्र सुखकारी ।।
विघ्न, दुस्वप्न और ग्रहतापा। माँ प्रभाव नहिं दे सन्तापा ।।
पीड़ित बालग्रहों से बालक। लहैं न दुःख, पाठ दुखघालक ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
महिमा मातु विरोध विदारक। नव मित्रता पुनः संचारक ।।

दुराचारि बल नाशता, देवि महात्म्य अपार।
राक्षस, भूत, पिचास सब, माता पाठ विदार।।

मम सामीप्य देइ तत्काला। मेरा यह माहात्म्य विशाला ।।
पुष्प, पशु, सुअर्घ्य अरु धूपा। दीप, गन्ध आदिक अनुरूपा ।।
ब्राह्मण भोजन अरु अभिषेका। होम, भोग अरु दान अनेका ।।
एक वर्ष इस विधि जो नाना। वस्तु अर्पित होवै सुखखाना ।।
एक श्रवण से वह सुख सारा। देता है यह चरित अपारा ।।
श्रवण महात्म्य सदा अघ हर्ता। नित आरोग्य, मोद का कर्ता ।।
प्रादुर्भाव, सुकीर्तन भारी। भूतों से करता रखवारी ।।
युद्ध विषय का चरित अपारा। करता है दैत्यन संहारा ।।

नाशक है नित शत्रु का, श्रवण सदा भयहारि।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
चरित परम कल्याणमय, देत दुखों को छारि।।

अस्तुति सुरमुनि, विधि जो कीनी। मम कल्याण बुद्धि, सुख मीनी ।।
सूना मारग कहुँ बन माहीं। दावानल से जब घिर जाहीं ।।
दस्यु घिरा, निर्जन अस्थाना। शत्रुग्रस्त, पड़ि दुःख निधाना ।।
सिंह, व्याघ्र, मङ्गलकरि भारी। पीछा करहिं प्राण जो हारी ।।
कुपित नृपति के ही आदेशा। बन्धन, बध का थान, विदेशा ।।
डगमगाइ नौका तूफाना। सागर मध्य जाइ जहँ प्राना ।।
युद्ध भयङ्कर शस्त्र प्रहारा। या पीड़ित वेदना अपारा ।।
और बहुत सा कष्ट कराला। करिके नष्ट, चरित जन पाला ।।

शत्रु,दस्यु अरु सिंह सब, मम प्रभाव से दूर ।
चरित अस्मरण करत ही, नहीं बनै कुछ क्रूर ।।

ऋषि कहते हैं

इस प्रकार कह चण्डिक देवी। अन्तर्धान हुई सुख सेवी ।।
निर्भय सुर भोगहि निज भोगा। करैं यज्ञ भागहिं उपभोगा ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चण्डिक शुम्भ निशुम्भहि मारी। अपर दैत्य पाताल सिधारी ।।
अम्बिकं नित्या सुनिये राजन। प्रकटइ बार-बार सुखकाजन ।।
जगती जन्मप्रदा, जग मोहै। जगतसार बनि वह जंग सोहै ।।
विनय सुनत भक्तन सुखदाता। ऋद्धि और विज्ञान प्रदाता ।।
प्रलय काल में देवि कराला। महामारि काली तत्काला ।।
व्याप्त करै ब्रह्माण्ड अपारा। माँ स्वरूप है अपरम्पारा ।।

महामारि बनती प्रलय, सृष्टि करत सुखकारि।
नित्या अजा,सनातनी, पालै अरु संहारि।।

लक्ष्मी बनत अभ्युदय काला। करै हानि बनि बिपत कराला ।।
गन्ध, पुष्प आदिक अरु धूपा। पूजै जो जन बने अनूपा ।।
धर्म, बुद्धि उत्तम गति जोई। धन पुत्रादि देइ माँ सोई ।।
पूजा मातु सकल शुभ मूला। दे कल्यान बुद्धि अनुकूला ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

卐

तेरहवाँ अध्याय

नृपति सुरथ तथा वैश्यवर समाधि को देवी का वरदान

ध्यानम्

उदयकाल के सूर्य सी, जिसकी कान्ति सुहाति।
चारभुजा, त्रयनेत्रयुत, जनरक्षक सुख्याति।।
हाथ अभयमुद्रा तथा, वर अंकुश अरु पाश।
शिवा देवि का ध्यान मैं, करता पुरवहिं आश।।

ऋषि कहते हैं

उत्तम देवि महात्म्य नरेशा। इस प्रकार मैंने उपदेशा।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
धारै जो जगती जगदम्बा। अरु जो मात्रजगत अवलम्बा।।

विद्या की जननी सुखदायी। जाहि देखि अज्ञान भगायी ।।
माया विष्णु बनी जग मोहैं। हों प्रसन्न जब तब नर सोहैं ।।
मोहित हुए-होत अरु होगा। सकल जगत ऐसा संयोगा ।।
अपर विवेकि, वैश्य अरु राजा। माया विष्णु रूप वह छाजा ।।
जाहु शरण परमेश्वरि भूपा। माँ प्रतिपालक शरण अनूपा ।।
भोग-स्वर्ग अरु मोक्ष सुहावन। आराधक लहता अति पावन ।।

मार्कण्डेयजी कहते हैं

ममता, राज्यहरण से, खिन्न भूप बेकाम।
सुनि मेधा मुनि के वचन, नरपति कियो प्रणाम।।

सुरथ, समाधि, विरक्ती जागी। मन बन गया देवि अनुरागी ।।
संशय व्रत भागा तत्काला। उपजा देवी प्रेम विशाला ।।
दर्शन हेतु नदी तट जाई। करन लगे तप परम सुहाई ।।
मिट्टी मूरति तहाँ बनाई। देवी सूक्त प्रेम से गाई ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुष्प, धूप अरु हवन चढ़ावैं। मुद मन से माता गुण गावैं ।।
धीरे-धीरे मित आहारी। फिर बन गये निरा आहारी ।।
अति एकाग्र चित्त से माता। का करते चिन्तन सुखदाता ।।
निज शरीर से रक्तं-निकारी। चण्डिक को बलि देइ जुहारी ।।

तीन वर्ष तक़ इस विधी, संयत चला विधान।
जगतधारिणी चण्डि तब, किया दुःख अवसान।।
इस प्रकार आनन्दमयि, जननी ले आनन्द।
हो प्रत्यक्ष दर्शन दिया, चण्डिक गत दुखद्वन्द।।

देवी बोलीं

कहा देवि सुनिये जन दोऊ। हूँ प्रसन्न माँगो वर कोऊ ।।
दूँगी सकलं वस्तु सुखदाता। माँगो अब नित भाग्य विधाता ।।

मार्कण्डेयजी कहते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा अपर जन्म में माँगा। अचल राज्य अरु बहु सौभागा ।।

और कहा इस जन्म सुहावन। पाऊँ निज साम्राज्य लुभावन ।।
वैश्य विरक्त-खिन्न संसारा। माँगा उत्तम ज्ञान अपारा ।।
ममता अहंकार जेहि जाई। कहा समाधि ज्ञान दो माई ।।

देवी बोलीं

अल्प काल में सुनिये राजा। हनी शत्रु, लो राज्य समाजा ।।
शाश्वत बने राज्य तव भूपा। बनो जगत में भूप अनूपा ।।
मृत्यु बाद रवि अंशोत्पन्ना। सावर्णिक मनु यश सम्पन्ना ।।
राजा तव कीरति सुखकारी। अद्वितीय हो नित शुभधारी ।।
सुमति वैश्य तुम गौरवशाली। रहे जगत जीती तव लाली ।।
दायक मोक्ष लेहु सुज्ञाना। जग महँ छावै सुयश महाना ।।

मार्कण्डेयजी कहते हैं

तिनको दे वाञ्छित वरदाना। अरु सुनि निज सभक्ति-गुणगाना ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
अन्तर्धान हुई फिर माता। सुमिरन जासु अतुल सुखदाता ।।

पाया इस भाँती वरदाना। क्षत्रियवर वह सुरथ महाना ।।
जन्म सूर्य से ले भूपाला। होंगे मनु सावर्णि विशाला ।।

सावर्णी मनु सुरथ, दिनकर से पावैं जनम।
निजकुल शोभा नृपति, दिया देवि यह वर परम।। 卐

तन्त्रोक्त देवी सूक्तम्

नमः देवि जगपालिनी, नमः शिवा जगदम्ब।
भद्रा, प्रकृति नमः जननि, विनवत सनियम अम्ब।।

रौद्रा - नित्या - गौरी धात्री। पुनः पुनः प्रणाम सुखदात्री ।।
ज्योत्स्ना चन्द्ररूपिणी माता। नमः सतत सुखदा जनत्राता ।।
वृद्धि, सिद्धि, रूपा कल्यानी। नमः शरणपालकमय कानी ।।
नैर्ऋत्या, शर्वाणि नमामी। नमो राजलक्ष्मी मुदकामी ।।
दुर्गा, दुर्गपार अरु सारा। सर्वकारिणी, ख्याति, अपारा ।।
धूम्रा कृष्णा सतत नमामी। रक्षा दो हे माँ! मुदगामी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौम्य, रौद्र जो रूप सुहाता। सतत प्रणाम उसे जगमाता ।।
और प्रणाम जगत आधारा। कृति देवि माँ बारम्बारा ।।
सब जीवन मँह व्याप्त जो, हरिमाया के नाम ।
नमः नमः उस मातु को, बारम्बार प्रणाम ।।
सब जीवन मँह बुद्धी रूपा। संस्थित जो जगदम्ब अनूपा ।।
नमस्कार सोइ देवि सुनामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सभी जीव महँ बस जो देवी। निद्रा रूप धरे सुखसेवी ।।
नमस्कार सोइ देवि ललामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
क्षुधारूप संस्थित जगत्राता। सर्वभूत महँ जो जगमाता ।।
नमस्कार सोइ माँ सतगामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सर्वजीव महँ छाया रूपा। संस्थित जो है देवि स्वरूपा ।।
नमस्कार सोइ माँ मुदगामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सर्वभूत मँह शक्ति-स्वरूपा। जगदम्बा जो बसै अनूपा ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
नमस्कार सोइ मातु सुनामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।

तृष्णारूप जीव महँ जोई। संस्थित जो देवी नित होई ।।
नमस्कार सोइ माँ मुदकामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
क्षान्ति रूप जो माँ सुखदायी। सर्वभूत संस्थित अति भाई ।।
नमस्कार सोइ माँ शुभगामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।

सब जीवों में व्याप्त जो, जाति रूप अभिराम।
नमः नमः उस मातु को, बारहिं बार प्रणाम ।।

सर्वभूत महँ लज्जा रूपा। जो जगदम्बा बसै अनूपा ।।
नमस्कार सोइ मातु ललामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सर्वजीव महँ शान्ती रूपा। जगत जननि जो बसै अनूपा ।।
नमस्कार सोइ माँ अभिरामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
संस्थित जो माँ श्रद्धा रूपा। सब जीवन महँ जगत् स्वरूपा ।।
नमस्कार सोइ मातु अकामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
कान्ति रूप संस्थित जो माता। सब जीवों में जग सुखदाता ।।

नमस्कार सोइ देवि सुकामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
संस्थित लक्ष्मी रूप सुहावनि। सब जीवन महँ जो मनभावनि ।।
नमस्कार सोइ मातु अनामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सब जीवन महँ वृत्ती रूपा। संस्थित जो जगदम्ब अनूपा ।।
नमस्कार सोइ मातु सुकामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
स्मृति के रूप संस्थिता जोई। सर्वभूत महँ जो नित होई ।।
नमस्कार सोइ माँ अभिरामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सब जीवन महँ जो सुखदाता। दया रूप धरि संस्थित माता ।।
नमस्कार सोइ माँ सद्गामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।

सर्वजीव में जो बसी, तुष्टि रूप सरनाम।
नमः नमः उस मातु को, बारहिं बार प्रणाम ।।

संस्थित मातृ रूप जो देवी। सब जीवन महँ जो सुखसेवी ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
नमस्कार सोइ मातु सुनामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।

सर्वजीव महँ भ्रान्ति स्वरूपा। संस्थित जो देवी का रूपा ।।
नमस्कार सोइ मातु अकामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
सकल भूत अरु इन्द्रिय सारी। अधिष्ठात्रि की महिमा धारी ।।
नमस्कार सोइ माँ अभिरामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।
चेतन रूप व्याप्त जगमाता। संस्थित जो अतिशय सुखदाता ।।
नमस्कार सोइ माँ जन हामी। नमः नमः माँ नमो नमामी ।।

इन्द्र सहित सब देवता, जिसका करते ध्यान।
पुराकाल में इष्ट पा, सो माँ दे कल्यान ।।
हने सकल मम आपदा, वह जगदम्बा आज।
हम निराश शरणागता, राखें माता लाज।।
दैत्योद्धत सन्तप्त हम, करते जाहि प्रणाम।
भक्ति नम्र जन दुख शमन, जो करती सुखधाम।।
माता सोई दुख हरें, देवैं शुभ कल्यान।
निःसहाय हम देवगण, माता दें सम्मान ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राधानिकं रहस्यम्

राजा बोले

सब चण्डिक अवतार की, कथा कहा ऋषिराज।
ब्रह्मन अब कहिये प्रकृति, अवतारन की आज ॥
चरण पड़ा द्विज श्रेष्ठ मैं, दीजै सच्चा ज्ञान।
यह स्वरूप अरु वह विधि, जिससे हो माँ ध्यान॥

ऋषि कहते हैं

राजन यह रहस्य अति गोपा। कथन योग्य नहिं यह आलोका ॥
पर तुम भक्त हमारे राजन। अतः अकथ नहि कछु सुख भाजन ॥
लक्ष्मी त्रिगुणमयी परमेश्वरी। कारण जगत आदि अखिलेश्वरी ॥
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
दृश्यादृश्य रूप से माता। व्याप्त जगत हैं अति सुखदाता ॥

लिङ्ग, योनि अरु नागहिं भारी। धारै माथे माँ सुखकारी ।।
गदा,पान पात्रहि अरु ढाला। मातुलिङ्ग कर चरित विशाला ।।
तप्त हेम सम कान्ती, भूषण। व्याप्त जगत है वह गतदूषण ।।
शून्य देखि जग लक्ष्मी देवी। तामसि रूप धरा सुखसेवी ।।

नारी रूप में प्रकट वह, रूप काजलाकार।
दाढ़ों से शोभित बदन, कटि अरु नेत्र अपार।।

कटा मुण्ड माँ के कर सोहै। प्याल, ढाल असिजन मनमोहै ।।
भुजा चारि शोभित अति माता। नयन विशाल सुशोभित गाता ।।
वक्षस्थल कबन्ध की माला। मस्तक मुण्ड माल विकराला ।।
तामसि हुई प्रकट यह भाँति। कहा लक्ष्मि से वह सुखदाती ।।
नमस्कार तुमको हे माता। नाम कर्म बतला जगत्राता ।।
तामसि से कह लक्ष्मी माई। नाम कर्म तूँ देसि बताई ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षुधा, एकबीरा जगभावनि। कालरात्रि दुरत्यया पावनि ।।
तृष्णा, निद्रा तृषा स्वरूपा। माया महा सुनाम अनूपा ।।

महा कालिका नाम अरु, महामारि जग मात।
कर्मों के अनुसार जो, जपै नाम सुख पात।।

काली से यह लक्ष्मी माता। किया दूसरा रूप सुहाता ।।
शुद्ध सत्व गुण से सम्पन्ना। रूप किया शशि सा उत्पन्ना ।।
वीणा, अक्षमाल कर धारी। अंकुश, पुस्तक वह वरनारी ।।
दिया उसे भी नाम अनेका। महालक्ष्मि जो धाम विवेका ।।
सरस्वती अरु आर्या, धीश्वरि। ब्राह्मी, कामधेनु, जगदीश्वरि ।।
वाक, महावाणी अरु भारति। वेदगर्भ जो जगती धारति ।।
और महाविद्या कह माता। नाम बताया सब सुखदाता ।।
पुनः कहा लक्ष्मी सुखदायी। सरस्वती कहाली जो मायी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निज-निज गुण अनुसार तुम, युगल बनावहु देवि।
नर-नारी मय इक तुरत, जोड़ा द्वय सुख सेवि।।

तत्पश्चात सुलक्ष्मी माता। स्वयं एक जोड़ा निर्माता ।।
इक नर अपर नारि,मय ज्ञाना। कमलासन सोहैं सुख खाना ।।
ब्रह्मन,विधि,विरञ्चि अरु धाता। नरहि पुकारा लक्ष्मी माता ।।
लक्ष्मी, श्री, पद्मा अरु कमला। नारी को कह जननी विमला ।।
काली और सरस्वति माता। फिर इक, इक जोड़ा निर्माता ।।
नील चिह्नमय कण्ठ सुहावन। इन्दु मुकुटधारी मन भावन ।।
श्वेत शरीर रक्त-भुज सोहैं। पुरुष सकल जग का मन मोहैं ।।
गौर वर्ण की सुन्दर नारी। रची महाकाली सुखकारी ।।

रुद्र, स्थाणु, कपर्दि अरु, त्रयलोचन विख्यात।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
शङ्कर के शुभ नाम से, हुआ पुरुष वह ज्ञात।।

त्रयी, अक्षरा भाषा नामा। नारी के बहु नाम ललामा ।।
स्वरा, कामधेनू अरु विद्या। बनि देवी नित हरैं अविद्या ।।
श्याम वर्ण का पुरुष सुहावन। गौर वर्ण अति नारी पावन ।।
सरस्वती माता निर्माता। राजन नाम सुनो बतलाता ।।
विष्णु जनार्दन अरु वसुदेवा। कृष्ण, हृषीकेशहिं सुख सेवा ।।
नाम हुआ नर परम सुहाता। कीरति बनी जगत विख्याता ।।
सुभगा, शिवा सुन्दरी पावन। गौरी, सती, चण्डि जग भावन ।।
इस प्रकार सुन्दर सुखकारी। पाया नाम बहुत वह नारी ।।

पुरुष रूप को प्राप्त करि, त्रयमाता मन भात।
ज्ञानी जानै भेद को, अज्ञानी इठलात।।

राजन सुनहु कथा विस्तारा। महालक्ष्मि जो कार्य विचारा ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
पत्नीरूप समर्पित कीन्हा। सरस्वती ब्रह्मा को दीन्हा ।।

शिव को दिया गौरि वरदायिनी। वासुदेव लक्ष्मी सुखदायिनि ।।
विधि संयुक्त-संरस्वति माता। रचा एक ब्रह्माण्ड सुहाता ।।
गौरी सह शिव अतिसुखकारी। भेदन किया अण्ड वह भारी ।।
सकल चराचर सृष्टि सुहायी। ब्रह्माण्डहि में दीन्ह दिखाई ।।
हरि लक्ष्मी वह पालन हारा। गौरी सह शङ्कर संहारा ।।
राजन सुनहु लक्ष्मी माता। सर्व सत्वमयि जग सुखदाता ।।

देवी वही अधीश्वरी, निराकार साकार।
धारण करती नाम बहु, मात्र जगत आधार।।
महामाया, सत, ज्ञान चित, नामान्तर कर ज्ञात।
अन्य प्रत्यक्ष प्रमाण अरु, एक नाम अज्ञात।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैकृतिकं रहस्यम्

ऋषि कहते हैं

सत्वप्रधान त्रिगुणमयी, महालक्ष्मी रूप।
तामसि आदिक भेद त्रय, बतलाया जो भूप।।
शर्वा, चण्डिक, भगवती, दुर्गा, भद्रा नाम।
जग में माँ के और भी, सुन्दर नाम ललाम।।

तमो गुणमयी काली माता। योग निद्राहरि की सुखदाता ।।
जिसकी अस्तुति कीन्ह विधाता। मधु कैटभ के ही संघाता ।।
महाकाल जननी कह लाई। वही जगत में जन सुखदाई ।।
भुजा, पैर अरु मुखदश माता। काजल श्याम रंग की गाता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीस नयन की पंक्ति सुहावन। दाढ़, दाँत चमकै अतिपावन ।।
यद्यपि मातु भयंकर गाता। विभव, कान्ति, सौभाग्य प्रदाता।।
कर में शङ्ख, चक्र, धनु, शूला। गदा, परिघ, भुशुण्डि अनुकूला ।।
स्रवत रक्त-मस्तक अरु बाना। धारहिं देवि भक्त-कल्याना ।।

दुस्तर माया विष्णु को, महाकालिका देवि।
आराधक वश जगत को, करत सदा सुख सेवि।।

परम कान्तिमय लक्ष्मी जोई। देव अङ्ग उत्पन्ना सोई ।।
महिषासुर मर्दिनि जगत्राती। त्रिगुणमयी प्रकृती कहलाती ।।
श्याम भुजा आनन अति गोरा। कटि अरु चरण लाल रँग बोरा ।।
कुच-मण्डल अतिश्वेत सुहावन। पिण्डलि जङ्घा नीला पावन ।।
माँ अजेय अनुपम बलशाली। स्वाभिमानमय रखती लाली ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
बहुरङ्गी सुवस्त्र मुदकारी। मय कटिभाग लगै सुखकारी ।।

भूषण, अङ्गराज अरु माला। वस्त्र आदि सब कुछ निराला ।।
कान्ति रूप,सौभाग्य निराली। अतिशय सुन्दर माँ की लाली ।।

संख्यातीत भुजामयी,किन्तु अठारह मान।
देवी की आराधना,इस विधि दे कल्यान।।

दाएँ-बाएँ नीचे भागा। बाहु अस्त्र सोहैं कर लागा ।।
वर्णन उनका जग सुखदाता। देते हैं जग को निति त्राता ।।
परशु,गदा अरु धनुष सुहावन। चक्र, शूल अरु कुलिश सुपावन।।
अक्षमाल, घण्टा अरु बाना। कमल खड्ग, शङ्खायुध नाना ।।
पान पात्र शक्ती अरु पाशा। ढाल, सुदण्ड कमण्डलु खासा ।।
सर्व देवमयि, कमलासीना। सब ईश्वरी, देव प्रवीना ।।
जो पूजै लक्ष्मी मन लाई। भू अरु सुर महँ छा प्रभुताई ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
गौरी देह प्रकट जो माता। सत्वाश्रित शुम्भहिं संघाता ।।

अष्टभुजी माँ भारती, शूल, मुसल,धनु, बान।
शङ्ख,चक्र,घण्टा, हलहिं, धारैं कर सुख खान।।

सरस्वती जो मथिनि निशुम्भा। अरु संहारक राक्षस शुम्भा ।।
सर्वज्ञता देहि जन सोई। पूजै उन्हें सभक्ती जोई ।।
मेधा ऋषि कह सुरथ नरेशा। सुनहु और कछु यह उपदेशा ।।
त्रय मूरति का कहा स्वरूपा। पृथक उपासन सुनिये भूपा ।।
महालक्ष्मी जब पूजा होई। मध्यभाग थापित करि सोई ।।
सरस्वती अरु माता काली। वाम और दक्षिण शुभशाली ।।
पृष्ठभाग महँ तीनहु देवा। मय करिये जननी की सेवा ।।
ब्राह्मी-ब्रह्म, गौर शिवदेवा। लक्ष्मी सहकरि हरि की सेवा ।।

सम्मुख तीनों देवि के, पूजो इस विधि मातु।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
अष्टादश भुज लक्ष्मी, दशमुख कालि सुहातु।।

फिर पूजौ सरस्वती मायी। अष्ट भुजामय जग सुखदायी ।।
बाएँ - दाएँ, मृत्यू - काला। पूजित पूजा विधि है भाला ।।
इस विधि से जो पूजै माता। बनै जगत में वह सुखदाता ।।
शुम्भासुर संहारिनि माता। अष्ट भुजा मयि जो मुददाता ।।
नौ शक्ति सह दाये-बायें। रुद्र गणेश पूज सुख पायें ।।
चामुण्डा, बराहि, इन्द्रानी। नारिसिहि शिव दूति बखानी ।।
ब्राह्मी, माहेश्वरि, कौमारी। वैष्णवि को नव शक्ति-उचारी ।।
'नमःदेवि' अस्तोत्र सुहावन। से पूजौ लक्ष्मी मनभावन ।।

मन्त्र, विनय माँ चरित जो, आये त्रय अवतार।
उनसे पूजो देवि को, महिमा अमित अपार।।

अष्टादश भुजवाली माता। महिषासुर को जो संघाता ।।
ब्राह्मी, काली, लक्ष्मी जोई। पूजनीय माँ लक्ष्मी सोई ।।
त्रिभुवन ईश्वरि जग सुखदाता। पुण्य-पापस्वामिनि जगमाता ।।
लक्ष्मी को जो नित आराधै। नहि जग की बाधा तेहि बाधै ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनै जगतपति जन संसारा। लहै कीर्ति वह भक्त-अपारा ।।
जगती धारिनि चण्डिक माता। भक्त-वत्सला जन सुखदाता ।।
भूषण,अर्घ्य,गन्ध, अरु अक्षत। धूप, दीप, पुष्पहि जन रक्षत ।।
दे नैवेद्य रक्त-बलि दाना। अथवा मदिरा मांसहिं दाना ।।

पूजा मदिरा मांसमय, और विधी बलिदान।
जो करते उपभोग हैं, नहिं ब्राह्मणहिं विधान।।

चन्दन मरम सुगन्धित माता। आचमनीय जलहिं दे माता ।।
विनय सहित ताम्बूलहि दाना। कर्पूरादि सामग्रि प्रदाना ।।
भक्ति-भाव से पूजहु देवी। बनहु जगत में नित सुख सेवी ।।
कटा मुण्ड महिषासुर जोई। सम्मुख बाएँ पूजहु सोई ।।
भगवति सह सायुज्य सुहाता। जिसकी कीर्ति परम विख्याता ।।
धर्म-प्रतीक विभवमय जोई। धारे जगत चराचर होई ।।
पूजौ सिंह देवि का वाहन। दक्षिणा देवि अस, दुख दाहन ।।
होवहु तन्मय माँ सुखदायी। पूजहुँ माता दुःख विहायी ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाथ जोड़ि फ़िर विनय करि, तीनहु चरित अपार।
माता की महिमा अमित, अति है अपरम पार।।
एक चरित यदि विनवन चहहु। मध्यम चरित सदा मन धरहु ।।
उत्तर, प्रथम चरित का गाना। करहु न कभी एकाकी ध्याना ।।
लहै अर्द्धपाठक असफलता। देती हैं माँ ताहि विफलता ।।
हो जब पाठ समाप्ती माता। विनवहु तब फिर जगती त्राता ।।
हाथ जोड़ि बिनु आलस बाधक। प्रदक्षिणा कर फिर तहँ साधक ।।
नमस्कार करि बारम्बारा। क्षमा याचना करहु अपारा ।।
मात्रा बिन्दू अक्षर नाना। सप्तशती सब मन्त्र समाना ।।
तिल, घृतमिश्रित, आहुति देहूँ। पढ़कर मन्त्र बनो सुख गेहूँ ।।
सप्तशती अस्तोत्र के, मन्त्रों से इस भाँति।
चण्डिक हेतू हविषवर, हवन करहु सुखदाति।।
नाम मन्त्र फिर लक्ष्मी देवी। करि के जाप बनहु सुखसेवी ।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
इन्द्रिय मन बस करि माँ ध्याना। हिय में ध्यावहु बनो सुजाना ।।

चण्डिक चिन्तन करहु सुहाई। सविनय कुछ देरी मन लाई ।।
माँ महँ तन्मय हो मनमाहीं। जपौ चण्डिका दुःख नशाहीं ।।
इस विधि जो नित माता ध्यावै। लहै सायुज्य परम सुख पावै ।।
भक्त वत्सला चण्डी ख्याती। जो नहिं पूजै पुण्य सुखाती ।।
पूजन करहु शास्त्र विधि माता। जननी हैं कल्याण-विधाता ।।
इस प्रकार सुख पावहु राजा। सोहैं जग में तव सुख साजा ।।

मूर्तिरहस्यम्

ऋषि कहते हैं

कही ऋषी तब नृपति से, भगवती नन्दा ध्यान।
सेवक को त्रयलोक दे, जो करती कल्यान।।
वाञ्छित फल दाता बनै, अतुलित गुणदा भक्ति।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
देवि नन्दजा जो भजै, सविनय और अशक्ति।।

अङ्ग कान्ति माँ स्वर्ण सुहावन। कनक रंग पट धारहिं पावन ।।
कनकोत्तम भूषण से भूषित। जन को भी जो करैं विभूषित ।।
शंख,कमल, अंकुश अरु पाशा। चारि भुजा माँ सोहैं खासा ।।
रुक्माम्बुजासना, श्री माता। इन्दिरा, कमला, लक्ष्मी माता ।।
अरु बहु नाम जननि के सोहैं। जो नित सकल भक्त-मन मोहैं ।।
रक्तदन्तिका परिचित नामा। सुनिये कथा भूप अभिरामा ।।
मातु स्वरूप श्रवण भयहारी। सब प्रकार अतिशय सुखकारी ।।
रक्तिम वस्त्र, लाल रंग काया। आभूषण भी लाल सुहाया ।।

अस्त्र-शस्त्र,नख लाल सब,दाँत नेत्र शिर बाल।
रक्त दन्तिका रक्त-मय,लागति अति विकराल।।

देवी निज जन पालैं वैसे। माता रक्षक शिशु की जैसे ।।
पत्नी का पति महँ जो रागा। जन के प्रति देवी अनुरागा ।।
वसुधा इव विशाल आकारा। माँ कुच गिरि सुमेरु सा प्यारा ।।
लम्बा, दीर्घस्थूल सुहावन। जननी का कुच सुन्दर पावन ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्कश अरु कमनीय लुभावन। पूर्णानन्द पूर्ण मन भावन ।।
सकल कामनादा माँ छाती। भक्तों को नित मातु पिलाती ।।
खड्ग, पात्र, हल, मूसलधारी। चार भुजा देवी सुखकारी ।।
सुरक्त-चामुण्डा योगेश्वरि। कहलाती जननी अखिलेश्वरि ।।

व्याप्त चराचर जगत माँ, जगदीश्वरि अभिराम।।
रक्त-दन्तिका जो भजै, लहै चराचर धाम।।

प्रतिदिन रक्त-दन्तिका ध्याना। दाता संरक्षण कल्याना ।।
पतिव्रता नारी सी माता। जग को सुख देवैं सुखदाता ।।
नीलवर्ण शाकम्भरी माता। नीलकमल सा नयन लुभाता ।।
त्रिवली भूषित उदर सुहावन। नीची नाभि लगति मनभावन ।।
अस्तन माँ कठोर सब ओरा। ऊँचा, गोल सटा सा छोरा ।।
कमलनिवासिनि माँ परमेश्वरि। रक्षै नित जन वह अखिलेश्वरि ।।
शाकसमूह, कमल, धनु, बाना। कर महँ धारैं अम्ब सुजाना ।।
शाक समूह-वाञ्छित दाता। क्षुधा-तृषा मृत्यु संघाता ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फल पल्लव अरु मूल, युत, फूला शाक समूल।
देती हैं माँ भक्त-को, जननी जो जग रूह।।
दुर्गा, शाकम्भरी, शताक्षी। कहलाती माता शुभ साक्षी ।।
दुष्ट दमनि, विशाल अघहारी। आपति शान्तिकरी सुखकारी ।।
गौरी, चण्डी, कालिक देवी। उमा, सती, पार्वती मुदसेवी ।।
माता के ही सुन्दर नामा। जगमें जिनकी कीर्ति ललामा ।।
स्तुति, अरु जप पूजा ध्याना। शाकम्भरि बन्दौं विधि नाना ।।
अक्षय अमिय रूप फल पावहु। अन्न, पान दात्री माँ ध्यावहु ।।
भीमा देवि नीलमय गीता। चमकैं दाढ़ि और सब दाँता ।।
स्तन गोल, नयन अतिभारी। नारी रूप धरें दुखहारी ।।
पानपात्र, मस्तक, डमरु, चन्द्रहास कर भाँति।
कालरात्रि अरु कामदा, एकवीरा कहलाति।।
भ्रामरि कान्ति विचित्र सुहावन। लगै तेज दुर्धर्ष डरावन ।।
अंगराज बहुरंग सुहाता। चित्र-विचित्र सुभूषण माता।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्र भ्रमर वाणी, महमारी। आदि नाम से मातु उचारी ।।
सकल मूर्ति ये चण्डिक माता। जग रक्षाकारक सुखदाता ।।
कामधेनु सम हैं फलदायक। नाम जपै जो हो सब लायक ।।
यह रहस्य अति गोप्य नरेशा। नहिं करना इसका उपदेशा ।।
वाञ्छितदा मूर्ती आख्याना। देवि जपौ हे नृपति सुजाना ।।
घोर ब्रह्म हत्या अघ नाना। सात जन्म संचित अवसाना ।।

सप्तशती के मन्त्र के, पाठ मात्र अघ जाय।
कल्मषहारी जननि यश, सुमिरत पाप पराय।।
वाञ्छितदा सब भाँति जो, अरु जो मय कल्यान।
बतलाया करि यत्न मैं, परम गोप्य माँ ध्यान।।

सोरठा- जगपति अतिशय मान, आ सुयश लो जग अचल।
जगत देविमय सोह, नमस्कार माता सकल ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

卐

क्षमा-प्रार्थना

परमेश्वरि मैं रात-दिन, करत सहस अपराध ।
दास मेरा यह मानि माँ, कीजै कृपा अगाध ।।
नहिं आवाहन जानता, नहीं विसर्जन ज्ञान ।
पूजन ढंग न जानता, क्षमहु देवि अज्ञान ।।
मन्त्र, क्रिया अरु भक्ति से, पूजा है मम हीन ।
देवि सुरेश्वरि दो कृपा, करो पूर्ण मैं दीन ।।
कह जगदम्ब पुकारता, करता शत अपराध ।
विधि आदिक दुर्लभ गती, अरु पाता बहु साध ।।
अपराधी जगदम्ब मैं, शरणागत जगत्रात ।
जननी जो चाहौ करो, दया पात्र मैं मात ।।
भूल तथा अज्ञान से, अथवा बुद्धि भ्रान्ति ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुई न्यूनता, अधिकता, मुद हो माँ दो शान्ति ।।

सत,चित, आनन्द रूपिणी, कामेश्वरि जगमात।
लो पूजा मम मुद माना, और बनो सुखदात ।।
परम गुह्य की रक्षिणी, सुरेश्वरी सुखधाम ।
ग्रहण निवेदन जप करो, दो सिद्धी शुभकाम ।।

देवी क्षमा-प्रार्थना अष्टक

छन्द-शिखंरिणी

न मन्त्रों-यन्त्रों को न, जप विधि जाने जड़मती।।
न माँ गाथा-ध्याना, विनय नहिं आवाहन गती।।
न मुद्रा ना पूजा, परम अपराधी सुनु सती।।
विलापा ना जाने अनुशरण जाने गुणवती।।
विपत्ती की हर्त्री, सकलजन भर्त्री सुखकरो।।
धनाभावाग्रस्ता, अलस अति हूँ माँ दुखदरो।।
तुही युक्ता सेवा, जननि बहु कीन्हा शुभकरो।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
कुपुत्रों की माता, बनत नहिं कूमाँ अघहरो।।

मही में माँ तेरे बहुत सुत साधे भगवती।।
शिशु मेरे जैसा चपल नहिं कोई शुभवती।।
मुझे ना त्यागो माँ उचित नहिं ऐसा गुणवती।।
कुपुत्रों की माता बनत नहिं कूमाँ सुखवती।।
न देवी की सेवा जगत महँ मैंने कुछ किया।।
न अम्बा को मैंने जगत रह कोई सुख दिया।।
तथापी माँ नेहा परम अनुकूला शुभ किया।।
कुपुत्रों की माता बनत नहिं कूमाँ मुद दिया।।
जगद्धात्री देवी सकल सुखमूला अघहरो।।
सुनो माता चण्डी,चरण तव आशा सुखदरी।।
कहाँ जाऊँ माँ हे,रहित अवलम्बा दुरमती।।
किसे खोजूँ माता, शरण तव हूँ दो सद्गती।।
नमो लक्ष्मी माता विभवगतिराशी मुदभरी।।
नमो वीणा पाणी, जगत जननी माँ सुखकरी।।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
नमामी मातङ्गी, शरण दुखहारी दुखदरी।।

नमामी ब्रह्माणी, सकल जग सिद्धी जयकरी।।
चिताभस्मालेपी, असन विष वाले जगपती।।
रहैं जो ही नंगे, भुजगपतिहारी पशुपती ।।
कपाली जो शोभैं, जननि तव दाया मुदवती।।
सदा माँ रुद्राणी, बसहु मन में दो सदगती ।।
विपत्ती में माता, भ्रमित मन मेरा अघहरो।।
करो रक्षा देवी, विनय सुख सेवी दुख दरो।।
सुनो मैं अज्ञानी, सतत अपराधी सुत भरो।।
भवानी तूँ हन्ती, सकल अघ माता शुभ करो।।

सोरठा- सब कुछ है दातार, देवी अष्टक शुभ करन।।
बनै मङ्गलाकार, पाठक, श्रोता लहि शरन।।
जग सुख बिनु आनन्द, नित माँ सुख महँ मन मचल।।
बनकर परमानन्द, जीवन को कीजै अचल।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीदुर्गा-सप्तशती सम्पूर्ण।

मुद्रक : *भारत प्रेस,* कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible] की प्रकाशित धार्मिक पुस्तकें मँगाकर अवश्य लाभ उठावें

[illegible]सूक्त भा०टी०	१५)
[illegible] भाषा ग्लेज	२००)
[illegible]निर्णय भा०टी०	२०)
रामायण मध्यम भा०टी०	२००)
रामायण मध्यम मूल दोहा चौपाई	७५)
वाल्मीकीय रामायण भाषा	२००)
अध्यात्म रामायण भा०टी०	२००)
आनन्द रामायण भाषा	२००)
राधेश्याम रामायण	४०)
भृगुसंहिता भाषा	१५०)
प्रेमसागर	६०)
श्रीमद् देवी भागवत भा०टी० सांची	६००)
श्रीमद्भागवत महापुराण भा०टी० साँची	५००)
सुखसागर भाषा मध्यम	२००)
दुर्गार्चन—पद्धति भा०टी०	१००)
दुर्गासप्तशती भा०टी० सजिल्द । मोटे अक्षरों में	६०)
दुर्गा सप्तशती भा०टी०	२५)
दुर्गा सप्तशती भाषा ग्लेज	२०)
दुर्गा सप्तशती ३२ पेजी मूल	२५)
दुर्गा सप्तशती ६४ पेजी मूल	२०)
दुर्गाकवच भा०टी०	८)
दुर्गा कवच ३२ पेजी मूल	३)
दुर्गा रामायण	३०)
गणेश सहस्रनाम भाषा टीका	३०)
मन्त्र—सागर भाषा टीका	७५)
बगलोपासनपद्धति—बगलामुख रहस्य भाषा टीका	४०)
दत्तात्रेय तन्त्र—भाषा टीका	२०)
उड्डीश तन्त्र भाषा टीका	२०)
रसराजमहोदधि पाँचों भाग	२००)
बृहत्पाराशरहोशास्त्र भा०टी०	२००)
मानसागरी भा०टी०	१००)
जातकाभरण भाषा टीका	८०)
बृहज्ज्योतिषसार भाषा टीका	७५)
ताजिक नीलकण्ठी भाषा टीका	७५)
कर्मविपाक संहिता भाषा टीका	७५)
चमत्कार चिन्तामणि भाषा टीका	८)
भाव कुतूहल भाषा टीका	७५)
मुहूर्तचिन्तामणि भाषा टीका	६०)
लग्नचन्द्रिका भाषा टीका	४०)
घाघ—भड्डरी की कहावतें भा०टी०	२०)
विश्वकर्मा प्रकाश भाषा टीका	७५)
स्त्री जातक भाषा टीका	३०)
शीघ्रबोध भाषा टीका	२०)
शिव स्वरोदय भाषा टीका	२०)
प्रभुविद्या प्रतिष्ठार्णव	२५०)
कुण्ड निर्माण स्वाहाकार पद्धति	६०)
विष्णुयोग पद्धति भाषा टीका	२००)
विवाह पद्धति भाषा टीका	२५)
उपनयन पद्धति भाषा टीका	२५)
वाशिष्ठी हवन पद्धति भाषा टीका	२५)
गणपति प्रतिष्ठा पद्धति भाषा टीका	२५)
धनिष्ठादि पञ्चक शान्ति भा०टी०	२०)
संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत कथा भा०टी०	६०)
एकादशी माहात्म्य भाषा	१५)
कार्तिक माहात्म्य भाषा टीका	५०)
हनुमद्—रहस्य भाषा टीका	६०)
गायत्री—रहस्य भाषा टीका	६०)
बृहत्—स्तोत्र रत्नाकर बड़ा	७५)
रघुवंश महाकाव्य प्रथम सर्ग	१५)
हितोपदेश मित्रलाभ भाषा टीका	२०)
किरातार्जुनीयम् १—२ सर्ग भा०टी०	१५)
सोरठी बृजाभार १६ भाग	७५)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशक – श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ीगली, वाराणसी–२२१००१